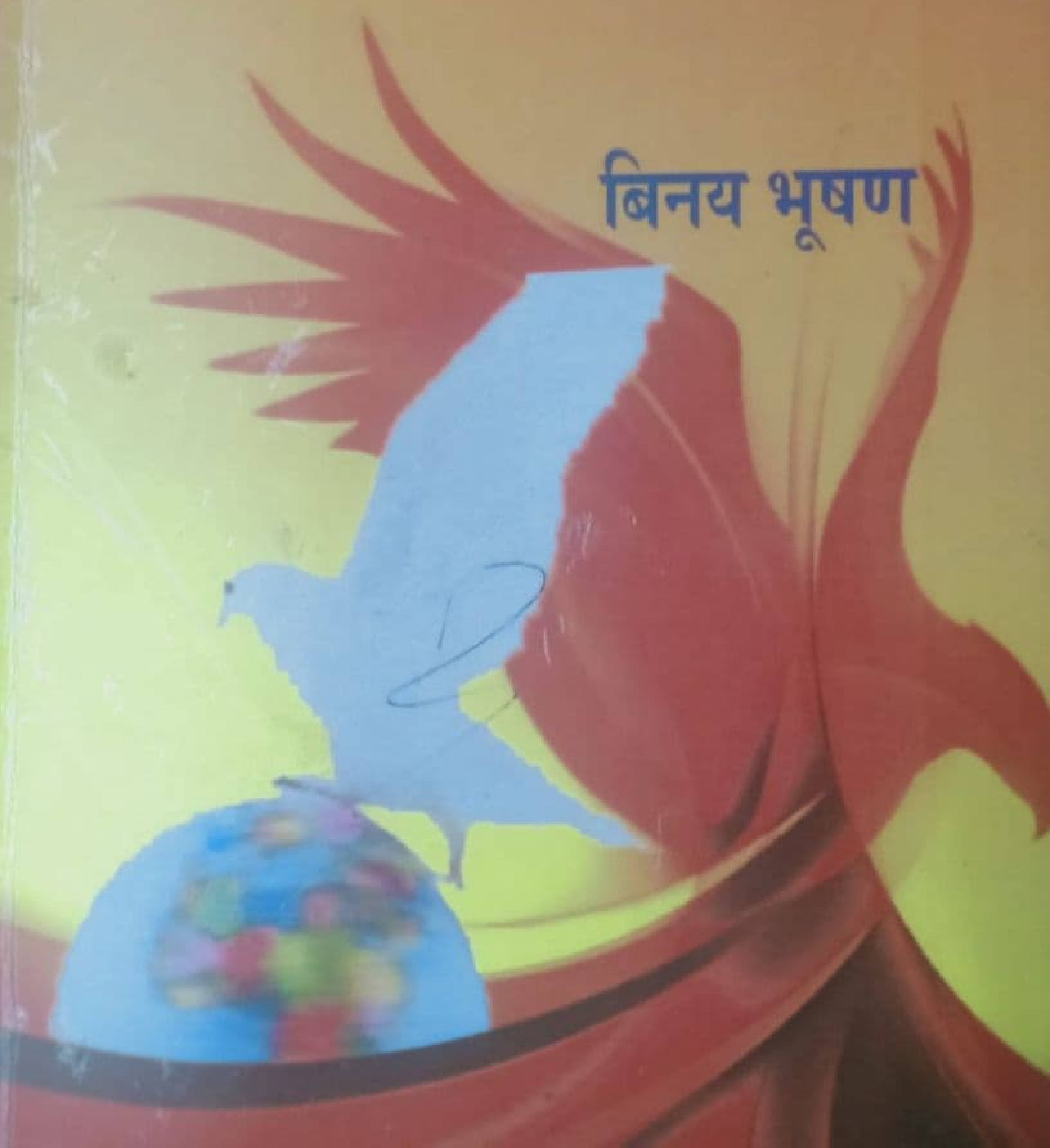
उजरा परवाक खोज



बिनय भूषण

उजरा परवाक खोज

बिनय भूषण



भोरुकवा पब्लिकेशन
कोलकाता



प्रकाशक :

भोरुकवा पब्लिकेशन

20, मल्लिक स्ट्रीट

पाँच तल्ला, कोलकाता - 700 007

मो. : 9903893108

Email : bhorukaba@yahoo.com

प्रथम प्रकाश - 2015

दाम : 150 टका

आवरण एवं मुद्रण :

लखनपति झा

69, बड़तल्ला स्ट्रीट, बड़ाबजार

कोलकाता - 700 007

मो. : 09748120990, 09883072050

Email : lakhanjha@hotmail.com

काव्य-क्रम

भूमिका

बिनय भूषणक कविता-संग्रह प्रकाशित भऽ रहल छनि, ई बात मैथिली कविताक लेल अत्यन्त हर्षक विषय थिक। मुदा, व्यक्तिगत रूप सँ हमरा लेल तँ ई आरो उत्फुल्ल हेबाक विषय थिक।

पछिला दू दशक सँ हम बिनय के कविता संग आ हुनक कविक संग जुड़ल रहल छी। कविक जुड़ाव होइ छै ओकर स्वर साम्यक कारण। हम जे काज पछिला तमाम समय सँ मैथिली कविता मे करैत रहल छी, बिनय सेहो वैह काज करैत रहलाह अछि। मोन पड़ैए जे एक बेर हम यात्रीजी के, जखन ओ अपन जीवनक नितान्त अन्तिम समय मे जीबि रहल छला मुदा पूर्ववत जाग्रत आ ज्वलन्त छला, पुछने रहियनि - `बाबा कखनहु एहन नहि लगैए जे किछु जरूरी चीज लिखव छुटि -रहल अछि? शारीरिक रूप सँ किछु आर ठीक रहितहुँ तँ जरूर लिखितहुँ, मुदा लिखि नहि सकलहुँ !` आ, एहि प्रश्नक उत्तर जाहि शव्द मे यात्री जी हमरा देने छला से, स्वर्णाक्षर मे लिखबा-जोग अछि। ओ कहने छला - `नहि नहि तारा बाबू, एकदम्म नहि होइए। लगैए जे अहाँ सब जे लिखि रहल छी से की लिखि रहल छी? हमरे बात लिखि रहल छी कि ने ! हमरा तँ होइए जे सहस्त्रबाहु भ` गेल छी हम। अहाँ नवतुरिया सभ के जे ई दू-दू टा हाथ अछि, होइए जे ई हमरे हाथ छी।`एकरा गुरु-कृपा कहल जाय जे बिनय भूषण आ हुनका सँ स्वर-साम्य, मुदा कला-वैभिन्यो रखैत, युवा लोकनि मे सदति निजता-बोध होइत रहैए।

बिनय के कविता-संग्रह सँ विशेष उतफुल्ल हेबाक एक प्रसंग तँ ई जे हुनका संग हमर निजता-बोध जुड़ल अछि, दोसर जे बिनय के गाम हमर मातृक। हमर मायक जन्म स्थान। माय हमर एहन जे कदाचिते लोक एहन भाग्यशाली होइत हेताह, जिनका ओहि विराट स्तरक स्त्रीक पुत्र हेबाक अवसर भेटैत हेतनि। हमर मायक निधन के पन्द्रह बरस सँ ऊपर भेल मुदा एखनहु जे कोनो नीक काज जीवन मे करै छी तँ होइए जे हुनके प्रीत्यर्थ क` रहल छी। आ, बिनय के गाम द` क` बनल सड़क सँ जखन गुजरै छी, आ से गुजरिते रहै छी, कहियो एहन नहि भेल अछि जे गाम दिस हाथ जोड़ि क` आँखि मुनि क` हम प्रणाम निवेदित नहि केने होइ। क्षमा करब, ई नितान्त व्यक्तिगत बात हम खोलि देल। मुदा करी की, हम बिनय के जीवनक एक महत्वपूर्ण अवसर पर अपन उद्‌गार प्रकट क` रहल छी।

मैथिली कविताक एक विराट परम्परा छै आ जतेक काज एहि क्षेत्र मे एखन धरि भेलैए, हम माने छी जे आजुक समय मे ई मैथिल -आइडेन्टिटी के एक अनिवार्य तत्त्व थिक। जे लोकनि कविता - परम्परा सँ साफे अनवगत छथि, ओहो कवि विद्यापति कें अपन पहचान माने छथि। ताहि सँ जँ कने बेसी बुझनुक छथि ओ चन्दा झा धरि एता।

ताहू सँ कने बेसी बुझनिहार सुमन जी धरि पहुँचता। मुदा, किछु बात छै एहि माटि मे जे ई धारा रुकबाक नाम नहि ल' रहल अछि। एहनो बुझनुक के कमी नहि, अछि जे राजकमल चौधरी, कुलानन्द मिश्र सँ होइत बिनय भूषण धरि कोना हमर अस्मिता, हमर स्मृति के अभिन्न अंग छथि, एहि बात के नीक जकाँ परेखि सकैत छथि। हमरा खुशी अछि जे मैथिली कविताक एहि ताकत के आइ अन्यत्रो, देश-दुनिञा मे पहचान कायम भ' रहल छै।

आधुनिक मैथिली कविताक परम्परा मे हमरा लोकनि दू तरहक कवि कें, कविता कें आरंभिके समय सँ देखैत छी। एक एहन कवि जे अनुभूति - प्रधान कविता लिखैत छथि, एहन कवि कें कहि सकैत छियनि - भावुक कवि। हिनका लेल काव्य-भूमिक समाजार्थिक परिप्रेक्ष्य के कोनो अर्थ नहि। हिनका लेल दुनिञाक आन समस्या, आन संकट, आन मुद्दा, आन भाषा आ साहित्यक कोनो मूल्य नहि । ई लोकनि `जय मिथिला जय मिथिला' करता, मुदा मिथिला किए शिथिला बनल छथि आ कोना हिनक शिथिलता मेटेतैक, तकर गहराइ मे जेबाक ने हिनका अवगति आ ने इच्छाशक्ति। एहन कवि अपना कें राजनीतिक दृष्टि सँ निष्पक्ष बतेता। राजनीतिक निष्पक्षताक अर्थ थिक प्रतिगामी आ जनविरोधी शक्तिक समर्थन करब, एहि बातक मर्म कें बुझबाक सामर्थ्य एहि भावुक कवि लोकनि मे नहि होइत छनि। मिथिलाक माटि-पानि एहन छैक जे विद्यावान आ कलावान लोकक उत्पत्ति बहुसंख्या मे एतय होइत एलैए आ भ' रहल छै। मुदा, मिथिलाक समाज एक गतिहत आ बन्द समाज रहल अछि। एहना स्थिति मे एहि विद्यावान आ कलावान लोक सभ कें जे बौद्धिक आ वैचारिक प्रशिक्षण चाही, दीन-दुनिञा कें देखबाक जे एक मार्मिक दृष्टि चाही, हमरा लोकनि सभ दिन सँ एहि मे हुसैत रहल छी।

मुदा, मैथिली कविताक आधुनिक युग मे दोसरो तरहक कवि होइत रहलाह अछि, जिनका अहाँ अनुभव -प्रधान कवि कहि सकैत छियनि। बौद्धिक रूप सँ जाग्रत, वैचारिक रूप सँ सजग, दीन-दुनिञा सँ वाकिफ, अपन रोग कें आ ओकर इलाज कें चिन्हबा मे समर्थ। कहब आवश्यक नहि जे एहने कवि लोकनिक बल पर मैथिली कविता आइ अपन पहचान कायम कऽ सकल अछि। हमर ई कवि, बिनय भूषण, एहने तरहक कवि छथि। हिनका लेल कविता लिखब कखनहु भावुकता मे बहि कऽ आनन्ददायी प्रलाप करब नहि थिक। ओ भाषाक मर्म कें बुझैत छथि, आ जनैत छथि जे भाषाक द्वारा कोना कोनो प्रतिरोध कएल जा सकैत अछि आ कोन तरहें जनपक्षधर शक्तिक संगोर कएल जा सकैत अछि।

बिनय भूषणक कविता-विषय बहुत व्यापक, अत्यन्त सुविस्तृत छनि। मिथिलाक गामघर, चर-चाँचर, आस्था-विश्वास, राग-विराग, परिदृश्यक कतबाहि मे जिबैत लोकक

संघर्ष, ओकर मनोनिर्मित सभ कथू बहुत आपकताक संग हुनकर कविता मे आएल अछि। से एक दिस। दोसर दिस, अपन एहि प्रिय देश भारतक स्थिति-परिस्थिति, जनसरोकार सँ कटल राजनीति, पूँजीपति-वर्गक हाथ मे सत्ताक हस्तान्तरण, आमजन द्वारा भोगल जाइत कुही - ई सभ हुनकर कविताक विषय बनल अछि। मुदा एतबे नहि, अफ्रीकी देश सभ आ कि दुनिञाक आनो भाग मे दबल-पेड़ाएल लोकक जीवन-संघर्ष, पर्यावरणक चिन्ता, लुप्त होइत संवेदना, मेटल जाइत जन-संस्कृति, संवेदनशील लोकक दुर्दशा - ई सभ सेहो हुनक काव्य-निर्मिति मे पर्याप्त स्पेस पौलक अछि। ओ परम्परा पर कविता लिखैत छथि। कहैत छथि जे *हे परम्परा, अहाँ प्रणम्य छी, प्रकाशपुंज छी जे हमरा आगू पसरल अन्हार कें विलीन कऽ सकै अछि। अहाँ हमरा आगूक बाट देखा सकै छी।* मुदा, विडंबनाक परिस्थिति देखबैत आगू ओ इहो कहैत छथि जे '*हे परम्परा, एते संभावना सभक अछैत अहाँ स्वयं रूढ़ि मे परिणत भऽ गेल छी, प्रवाह अहाँक समाप्त भऽ गेल अछि। तँ, अहाँ कें हम नेस्तनाबूद करब।* एहि ठाम एहि कविक आलोचनात्मक विवेक कें देखल जा सकैत अछि। मोन पड़ै छथि हमरा *ओरहान पामुक*, नोबेल-पुरस्कृत साहित्यकार, जिनका अपन देश सँ, अपन परम्परा सँ एतेक बेसी प्रेम छलनि जे रूढ़िक विरोध मे उतरय पड़लनि आ हुनका देशक सरकार एहि चूड़ान्त देश-प्रेमी सृजेता कें देश-निकाला देलक। क्यो बुझनिहारे एहि बात कें बुझि सकैत छथि जे मिथिला-मैथिलीक बहुतो रास बात सभ के एते विरोध, एते प्रतिरोध हम सभ किए करै छी ! एहि दुआरे करै छी जे मिथिला-मैथिली सँ हमरा बहुत प्रेम अछि !

एहि ठाम बिनय के कविता-कला पर किछुओ बात नहि करी तँ कदाचित छुछुन्न लागत। मुदा, हुनकर कला की थिक? कविता मे कोनो कला नहि, कलाबाजी नहि - यैह बिनय के कविता-कला थिक। कविता मे जे अपन आन्तरिक लय होइत छैक, जकरा कारणेँ कविता आ गद्य कें अलग-अलग चीन्हल जा सकेए - बस ततबे टा कला हुनका चाही बांकी जे हुनका लेल सर्वोपरि महत्वपूर्ण छनि, से थिक - ओ बात, ओ मुद्दा, ओ मर्म - जाहि पर ओ कविता लिखैत छथि। जीवकान्त आ कुलानन्द मिश्रक काव्य-परम्परा मे राखि कऽ कदाचित बिनय के कविता कें बेसी नीक जकाँ बूझल जा सकेए।

कविता-संग्रहक प्रकाशन पर हम अपन एहि अनुज कें हृदय सँ बधाइ दै छियनि।

तारानन्द वियोगी
अररिया
21.3.2015

बिनय भूषण मैथिलीक परिचित आ पठित कवि छथि। 'उजरा परव
खोज' हुनक महत्त्वपूर्ण कविताक संकलन थिक। बूझल जा सकैत अछि
बहुदिशि सकारात्मक मूल्यबोधक नकारात्मक एहि सामाजिक समय
सकारात्मक जीवन-प्रसंगक इच्छा व्यक्तित्व कें 'एबनॉर्मल' बना दैत छैक,
कि कहै छै जे बिन नाकवलाक गाम मे नाकवला नक्कू ! बिनय भूषणक कवि
'ओ एबनॉर्मल अछि' मे कविस्वप्न आ सामाजिक यथार्थक संघातक बीच
निकलल विद्रूपता हुनक कवि व्यक्तित्व एहि काव्य संकलनक मुख्य चेतना
रूप मे पढ़ल जा सकैत अछि। 'उजरा परवाक खोज' अपन सांकेतिकता
शांतिक ओहि द्वीपक संभावनाक खोज अछि जतए सामाजिक-वैयक्ति
अंतर्विरोध अपन अधिकतम न्यूनांक पर अवस्थित भऽ जीवन के मनोरम बनबा
अवकाश रहैत छै। 'नोर आ पियास'क संवाद मे ओझरायल प्रतिबंधी समय
विकट व्यथाक कविता मे अवतरण कोशी-कमला-बलानक नीर-प्रवाही चेतना
संग पूरैत नीर के नोर बनि जयबाक प्रक्रियाक साक्षी बनि जाइत अछि। 'ए
कठिन समय' मे कविता अपन आंतिरक निवेदन मे छोड़ि जाइत अछि ए
छटपटाइत प्रश्न। प्रश्न कि, 'अहीं कहु भाई/हम कोना हँसब'! समय कठि
एहन जे कवि के कविता लिखऽ मे लाज होइत छैक, मुदा बिंडबना ई कि ई ला
अपना के उजागर कविते मे करैत छै। कविता लिखबाक अर्थ पुछैत कवि
जीवनक कोमल प्रसंग मे निस्संगक घमासान अछि, एक निरव कोलाहल जक
! जी, निरवता समाजक आँगन मे आ कोलाहल कविक अंतर्मन मे ! एहि निरव
कोलाहल मे 'कविता आत्मा मे नहि नुकाइत अछि', ओह आ 'कविताक दोकान'
बहुत त्रासद, एहन 'उनटा बसात' मे कविता लिखनाइ मुश्किल जत मुक्ति
प्रकाशमय संभावनाक तलाश मे संभव होइत कविता मे कविता सँ मुक्ति
अन्हारक हाहाकार मे समाहित पत्नीक रेड-एलर्ट आ ध्वनित 'माँक ब्रह्मवाक्य'
बीच भरोसा ई जे सबहिक बीच ई बोध जे 'हमर कविता/शेष नञि भेल अछि'।

बिनय भूषणक काव्य पोथी, 'उजरा परवाक खोज' मैथिली कविताक
एक उपलब्धि भऽ सकैत छै, मुदा ई 'खोज' तखने सार्थक आ कि संभव जखन
एहि मे समाजक संजोगक अवसर हम रचि सकी। एहि भरोसक सँ अछि अहाँक
हाथ मे 'उजरा परवाक खोज'।

- प्रफुल्ल कोलख्यान

कविक मन्तव्य

कविताक संदर्भ मे हमर ई धारणा अछि जे ई प्रतिवादक एकटा सशक्त माध्यम अछि। परिवार, समाज, राष्ट्र व विश्व मे जखन कखनो कोनो आपत्तिजनक घटना घटैत अछि आ हम ओहि सँ आहत होइ छी तखन अपन वेदना आ आक्रोश के कविता मे अभिव्यक्त करै छी। अन्याय आ अव्यवस्थाक विरुद्ध जे कोनो भाव व विचार हमर मस्तिष्क मे जनमैत अछि सैह कविताक स्वरूप लऽ लेत अछि। कविता जँ जीवन सँ सम्बन्धित हो तँ ओ कोनो रूप लऽ सकैत अछि। कखनहुँ-कखनहुँ तँ ओ सपाट बयानी जकाँ लगैत अछि, मुदा सभटा सपाट बयान कविता नहि होइत अछि ओहि मे जीवन व विचारक छंद संगुफित रहैत अछि। कखनहुँ-कखनहुँ कविता नाराक शक्ल लऽ लेत अछि, कारण सही नाराक सम्बन्ध जीवन सँ अछि। कविता विचारपरक सेहो भऽ सकैत अछि कारण विचारक सम्बन्ध सेहो जीवन सँ अछि।

छन्दमुक्त आ छन्दयुक्त कविताक बीचक भेद सदिखन चर्चा मे रहैत अछि। छन्दयुक्त कविता सुन्दर भऽ सकैत अछि, मुदा आवश्यकता नञि अछि जे ओ कविता समाज सँ सरोकार रखैत हो। जखन ओहि कविता मे सामाजिक सरोकार नहि हो तखन तँ ओ अनुपयोगी साबित होयत। बहुत रास सामाजिक, धार्मिक व आर्थिक समस्या एहन अछि, जकरा छन्द मे अभिव्यक्त नहि कयल जा सकैत अछि। छन्द युक्त व छन्दवद्धता सँ हमर तात्पर्य तुकवन्दी सँ अछि। एहना स्थिति मे छन्दमुक्त कविताक रचना आवश्यक भऽ जाइत अछि। हमरा बुझाइत अछि एहि हेतु हमर कविता छन्दमुक्त अछि। छन्दमुक्त कविता आ गद्य मे मुख्य अन्तर ई अछि जे कविता मे प्रवाह आवश्यक अछि। इयैह प्रवाह छन्दमुक्त कविता कैं गद्य सँ अलग करैत अछि। कविता मे जे प्रवाह आबैत अछि ओकर कारण एकर अप्रत्यक्ष छन्द अछि।

हमर कविताक मुख्य तत्व विचार अछि। विचारहीन कविता किन्नहु कविता नहि भऽ सकैत अछि। मष्तिष्क मे जखन वैचारिकता नहि रहत तँ ओ हृदयक भाव कें ग्रहण नहि कऽ सकत। समाज मे अपन विचार कें अभिव्यक्त करबाक लेल काव्य रचना आवश्यक अछि। तें हम अपन कविता कें विचारवादी कविता सँ अभिभूत करऽ चाहब। हमरे नहि हमरा संग रचना प्रारंभ करयवला अधिकांश कविक कविता विचारवादी कविताक श्रेणी मे राखल जा सकैत अछि।

नब्बे के दशक मे जे किछु कवि सभ चर्चित भेलाह ओकर कारण रचना

मे नव विचारक संगुफन अछि। एहि कालखण्डक कविता अपन पूर्ववर्ती पीढ़ीक
कविता सँ पूर्णतः भिन्न अछि। एहि पर चर्चा-परिचर्चा आवश्यक अछि। एकर
इहो कारण भऽ सकैए जे उदारीकरण, ग्लोवलाइजेशन आ उत्तरआधुनिकता
आदि विचारक अवतरण एहि कालखण्ड मे भेल अछि। सोवियत रूसक विघटनक
पश्चात् सुपर पावरक परिकल्पना आकार लऽ लेनय छल। उपर्युक्त समस्त
घटनाक सम्बन्ध विचार सँ अछि। अमानवीय विचारक विरुद्ध लड़बाक लेल
मानवतावादी विचारक स्थापना आवश्यक अछि।

व्यक्तिगत रूप सँ हमरा मार्क्सवाद सर्वाधिक मानवतावादी विचार बुझ
ाइत अछि। सहजहि हम मार्क्सवादक पक्षधर छी। हमर प्रयास रहैत अछि जे
हम अपन रचना मे मार्क्सवादी विचारधारा कें अभिव्यक्त करी। एहि ठाम
ध्यातव्य जे सत्ताक लेल जे कियो मार्क्सवादक उपयोग करैत अछि, साहित्य मे
एहि विचारक उपयोगक प्रणाली भिन्न भऽ सकैत अछि। सोझ अर्थ मे ई कही
सामाजिक विषमताक विरुद्ध विचार युद्धक हथियार अछि हमर कविता।

प्रस्तुत पोथी `उजरा परवाक खोज` हमर पहिल काव्य संग्रह अछि। एहि
संग्रह मे संकलित कविताक संदर्भ मे किछु कहब उचित नहि बूझै छी, कारण
हमरा जे कहबाक अछि, से कविते मे कहने छी। जौं पाठक लोकनि कें एहि
कविता सभ मे किछु उपयोगी वस्तु भेटत तँ हम अपन श्रम के सार्थक बूझब।
हमर प्रयास छल जे एहि संग्रह मे अपन प्रारंभिक कविता दी। पाण्डुलिपि नष्ट
भेलाक कारणे सभ कविताक संकलन नहि भऽ सकल। किछु पाण्डुलिपि सभ
जीर्ण-शीर्ण अवस्था मे अछि मुदा जीवन संघर्षक कारणे से संभव नहि भऽ
सकल।

एहि संग्रहक पाण्डुलिपि हम किन्नहु तैयार नञि करितहुँ जौं अंजय चौधरी हमरा रोज तगादा नहि करितथि। एहि संग्रहक चयन मे हुनक महत्वपूर्ण भूमिका। युवा कवि अमरनाथ झा `भारती` सेहो धन्यवादक पात्र छथि जे समस्त पाण्डुलिपि कें सरियेलनि आ पुस्तक रूप मे सोझा केलनि अछि। दक्ष वर्ण संयोजक श्री लखनपति झाक प्रति साधुवाद व्यक्त करैत छी जे एकाग्रचित्त भऽ समस्त कविता कें पोथीक आकार देलनि।

अन्त मे पाठक लोकनि सँ निवेदन जे त्रुटिक संदर्भ मे सूचित करी।

यात्री जयन्ती
[illegible] पूर्णिमा
2015

- विनय भूषण

प्रकाशकीय

'*भोरुकवा*' क प्रकाशन वैशाख 2058 विक्रमी मे मुद्रित आ ओहि सं पूर्व मासिक हस्तलिखित पत्रिकाक रूप मे होइछ। एहि प्रकाशनक क्रम मे दू गोटेक विचार अहम। प्रथमतः गुड्डू भाइजी (अंजय चौधरी) आ तार्थार मे नीक प्रतिष्ठा पाबि चुकल युवा साहित्यकार बिनय भूषणजी। भोरुकवा अपन यात्रा हस्तलिखित फोल्डर पत्रिका 1999 ई. सँ शुरु कऽ आइ प्रकाशनक क्षेत्र मे पदार्पण कऽ रहल अछि।

कोनो साहित्यकार के बड्ड लगीच सँ देखब, हुनका पढ़ब आ बुझब ई तीनू चीज हमर बिनय भूषण जी सँ पूरित भेल अछि। हिनक साहित्यिक संसार बहुआयामी छन्हि। हिनक रचना औखन धरि विभिन्न पत्र-पत्रिका मे छिड़िआयल पाठक वर्ग धरि पहुँचि सकल अछि। विचारक सक्कत, यथार्थवादी कविता हिनक परिचिति बनि चुकल अछि। हिनक कविताक भाव आ शब्द संयोजन पाठक कें आकृष्ट करैछ। हिनक समस्त रचना-संसार मे जीवन संघर्ष आ परिवर्तनक प्रतिबद्धता सद्यः परिलक्षित होइछ। बिनय भूषण कविक अतिरिक्त एकटा सफल सम्पादक, कथाकार, गीतकार, उपन्यासकार आ समालोचक सेहो छथि। हिनका गद्य एवं पद्य दुनू विधा मे समानाधिकार प्राप्त छन्हि।

पाठक हिनक साहित्य संकलित रूप मे पढ़लाक बाद हिनक कछमछी सँ अवगत होयताह आ `उजरा परवाक खोज` किएक भऽ रहल अछि तकर कारण बुझि सकताह।

आशा अछि बिनय भूषणक `उजरा परवाक खोज` पाठक कें वेश आकृष्ट करत आ मैथिली साहित्यक संसार मे अपन एकटा नव कीर्तिमान स्थापित करत।

ात्री जयन्ती
येष्ठ पूर्णिमा
01

अमर भारती
प्रकाशक
भोरुकवा पब्लिकेशन

समर्पण

इतिहासक समस्त ओहन लोक कें जे समाज कें सर्वोत्तम बनेबाक लेल अपन जीवन समर्पित कयलनि।

मिझाऽ दियौ

एहि बारुदक ढेरी कें
जुनि भरकाउ हमर मित्र
एकर चिनगी सँ
धधकि रहल अछि गाम
धधकि रहल अछि देश
धधकि रहल अछि ग्लोब
सत्य कहै छी मित्र
एहि ढेरी कें
जुनि सुनगाउ
मिझाऽ दियौ एकरा।

मृत ज्वालामुखी जकाँ एकरा
धरतीक गर्भ मे गुम होयबाक लेल
छोड़ि दियौ मित्र
कारण
एकर पहाड़ बनबाक कहानी
जनमाऽ सकैत अछि असंख्य त्रासदी
एकर लावा मे
मिट्टीपलित भऽ जयतैक
मानवक अस्तित्व
बाँचि जेतैक अहू
पहाड़क शीश जकाँ
अपन माथ ऊँच करबाक अहं।

एकर लावा सँ
जरि जयतैक हरियर कचोर धरती
ठाढ़ भऽ पाओत मात्र
एकटा ज्वालामुखी पहाड़
सत्ते कहै छी मित्र
मिझाऽ दियोक
एहि बारुदक ढेरी कें।

OPPO F7

मनुक्खताक अन्तक तिलिस्म मे लीन
ई बारुदक ढेरी
मनुक्खताई कें
कऽ रहल अछि सुड्डाह
एकर छाउर मे
दौड़ि रहल अछि दानव
अपन नोकगर आ धरगर दाँत सँ
छलनी कऽ रहल अछि
मनुक्खताईक देह।

एकर छाउर मे
दौड़ि रहल अछि लोक
बस सफेदपोश लोक
एहि छाउर मे
देखाइत अछि
मनुक्खक अधजरू काया
चिचियाऽ रहल अछि लोक
एकर आगि मे
जरि रहल अछि
हरियर-हरियर गाछ
एकर आगि मे
धधकि रहल अछि खोपरि
सत्ते कहै छी मित्र
एकर छाउर मे
झँपा गेल अछि
इज्जतक शिकार माय
इज्जतक शिकार बहिन।

सत्ते कहै छी भाई
एकर लुत्ती सँ
धधकि रहल अछि
पेटक आगि
 एकर आगि मे

धधकि रहल अछि रोटी

एकर आगि मे
धधकि रहल अछि असंख्य माय
ओहि ठाम कानि रहल अछि पुत्र
एकर आगि मे
धधकि रहल अछि पुत्र
ओहि ठाम कानि रहल अछि माय
एकर आगि मे
धधकि रहल अछि पति
एकर बगल मे पत्नी
फोरि रहल अछि लहठी
असंख्य पत्नी
पोछि रहल अछि सिन्नुर
जुनि पुछू आब आओर
सत्ते कहै छी भाय
चन्द सफेदपोश लोक
सेकि रहल छथि हाथ
एहि बारुदक ढेरी कें
मिझाऽ दियौ।

●●●

ओ एबनॉर्मल अछि

ओ एबनॉर्मल अछि
कारण ओ सुड्डाह कऽ देने अछि
अपन अन्तरक
गोट-गोट स्वार्थक बिहनि।

ओ एबनॉर्मल अछि
कारण ओ देखऽ चाहैत अछि
एकटा एहन दुनिया
जाहि मे सभक चेहरा पर
देखाइत हो मुस्कानक लकीर

ओ एबनॉर्मल अछि
कारण ओकर हृदय मे
समाऽ गेल अछि दयाक महासमुद्र
दयाक बैसाखी पर ओ
देखऽ चाहैत अछि
अपन स्वप्नक साकार प्रतिबिम्ब
जाहि मे विषादक आगि मे
छटपटाइत लोकक छटपटाहटि
चलि जाई सात समुद्र पार
ओ देखि सकय
सभ लोकक बिंहुसैत मूँह।

ओ एबनॉर्मल अछि
कारण फैशनक बात
लगैत अछि ओकरा बेकार
ओ देखऽ चाहैत अछि
संस्कृतिक सजल सजायल फूलवाड़ी
क्षद्म आधुनिकता सँ
करैत अछि परहेज।

ओ एबनॉर्मल अछि
कारण ओ कहियो नञि
स्वीकारलक आड़िकट्टा संस्कृति
मेहनतियेक छुच्छे
केलक पूजा-अर्चना।

ओ एबनॉर्मल अछि
कारण ओ निहारैत अछि
चारु कात खेतक हरियरी
सावनक फुहार मे
नहाइत-मुस्किआइत धानक गाछ
ओकरा नीक लगैत अछि
अगहन मास मे मजुरक मुँहक मुस्की
ओकरा नीक लगैत अछि
हरियर जाजीम सन पसरल
नान्हि-नान्हि गहुमक गाछ
ओकरा नीक लगैत अछि
सोन सन चमकैत
पाकल-पाकल गहुमक शीश।

ओ एबनॉर्मल अछि
कारण भगति आ चैताबर गबैत
मजुर कें देखव
नीक लगैत अछि
ओकरा ललचाबैत अछि
मक्केक धनशीशाक गंध।

ओ एबनॉर्मल अछि
कारण सिनेमा हॉलक विशाल पर्दा पर
देखाइत अश्लील गतिमान चित्र
बेकार लगैत अछि ओकरा।

ओ एबनॉर्मल अछि
कारण ओ समाज मे व्याप्त
कदाचार आ भ्रष्टाचारक
करैत अछि विरोध।

ओ एबनॉर्मल अछि
कारण भ्रष्टाचारक दलदल सँ
करैत अछि ओ परहेज
ओ चाहैत अछि
भ्रष्टाचारक गाछ कें
कऽ दी निर्मूल
ओ चाहैत अछि
प्रत्येक व्यक्तिक हृदय मे
उभरि जाइ
सच्चरित्रताक महासमुद्र।

●●●

कविताक प्रार्थना

हे कवि !
अहाँ हमरा जुनि बजाउ
शराबक दुर्गन्ध-माँझ
अहाँ जखन कोनो वेश्याक संग
लूटैत रहैत छी आनन्द
तखन हमरा जुनि बजाउ
हमरा जुनि बजाउ
कोनो शीत ताप नियंत्रित कक्ष मे।

अहाँ सुनि लिअऽ आ मोन राखब
हम किन्नहु नहि उतरब
अहाँक कलमक मोसि मे
हम किन्नहु नहि उतरब
अहाँक डायरी मे
ता धरि जा धरि अहाँ
बूझब हमरा
अपन फैशन छुच्छे फैशन

•••

रुआंडा : एकटा शब्द चित्र

हमर हृदयक विशाल धरती पर
भोंका गेल अछि
एकटा चमचमाइत/नोकगर आ चोखगर भाला।

सम्पूर्ण ब्रह्मांड
नाचि रहल अछि
हमर छाती मे।

जातीय संघर्ष / आ आतंकक नींव पर
ठाढ़ अछि
एकटा डेराओन चित्र।

आँखिक आगू / नाचि रहल अछि
अफ्रीकाक भूगोल
धधकि रहल अछि रुआंडा
दानवताक नांगट चित्र
देखाऽ रहल छैक
विश्वक ग्लोब पर।

चारु कात/आदिम रुप मे
देखाइत अछि
मनुक्खक चित्र
बम बन्नुक आ बारुद
प्रतिस्थापित अछि
दाँत आ नहक लेल।

द्वेश आ आतंकक पेटक संग मनुक्ख
मनुक्खक रक्त सँ
भरि रहल अछि अपन पेट।
साम्राज्यवादी ताकत
मनाऽ रहल अछि जश्न ओहिना
जेना हँसैत छल
प्राचीन रोमक शासक
गुलामक लहास देखि कँ।

•••

मणिपद्म

मणिपद्म !
अहाँ मैथिलीक महानायक छलौं।
मणिपद्म !
अहाँ महागाथाक उन्नायक छलौं।
मणिपद्म !
अहाँ लोक शब्दक महाराज छलौं।
मणिपद्म !
अहाँ दलित लोकक माथक ताज छलौं।
मणिपद्म !
अहाँ साहित्यक तीर्थयात्री छलौं।
मणिपद्म !
अहाँ जन-गन-मन पर राज केलौं।
मणिपद्म !
अहाँ जन साहित्यक विकास केलौं।
मणिपद्म !
अहाँक लेल असह्य छल श्रुति-शब्द अपमान
मणिपद्म !
अहाँ गाम-गाम आ डगर-डगर पर
बिछलौं शब्दक रत्न
मैथिलीक धरती पर अनलहुँ
लोक साहित्यक रंग।

●●●

तरुआरि

(1)

तरुआरि
हमर पायर सँ
एक हाथ नीचा
अपन नोकक संकेत
हमर तरबा दिस कऽ रहल छैक।

तरुआरि
हमर छाती दिस
कऽ रहल अछि
अपन नोकक संकेत।

तरुआरि एकटा नञि अछि
सहस्रो तरुआरि
लपलपाइत अछि
हमर गात्र-गात्र दिस

तरुआरि हमर माथ पर
लटकि रहल अछि
भेदऽ लेल हमर मस्तक।

गर्दनि पर लटकल तरुआरिक धार
हमरा स्थिर रहबाक लेल
कऽ रहल अछि संकेत।

●●●

तरुआरि

(2)

हमर आँखिक आगू
देखाऽ रहल अछि
असंख्य मुट्ठी
मुट्ठी मे जकड़ल अछि
हमर इर्द-गिर्द
असंख्य तरुआरि भँजाऽ रहल छैक
राजनीतिक विद्रुपताक हाथ मे
देखाइत अछि रक्त रंजित तरुआरि
विदेशी पठाऽ रहल अछि
गुलामीक लेल
मधुर बान्हल तरुआरि
दानवता आ आतंकक तरुआरि
खेहारि रहल अछि
मनुक्खताई कें
उत्तर आधुनिकताक तरुआरि
साहित्यक गर्दनि कें
छोंपि लेबाक लेल
तमसायल लपलपाऽ रहल अछि।

●●●

बिहनिक सपना

बिहनि के एकटा सपना होइत अछि
सपना एकटा सुन्दर आ विशाल
बिहनि गिरहतक कोठी वा छिट्टा मे
बिहनि घर मे राखल ढेरी मे
ओनाइत रहैत अछि
कछमछाइत रहेत अछि
बिहनि चाहेत अछि हम
बनि सकी एकटा गाछ।

बिहनि औगतायल रहैत अछि
धरतीक गर्भ मे जयबाक लेल
बिहनि उदास बैसल रहैत अछि
कोठी, छिट्टा आ ढेरी मे
बिहनि सदिखन
जोगने रहैत अछि एकटा सेहन्ता
अपन छाती मे
बिहनि सदिखन
बनऽ चाहैत अछि गाछ
गाछ-छोट-गाछ-विशाल गाछ
कोनो सुरति मे
बिहनि बनऽ चाहैत अछि गाछ
बिहनि सदिखन
गिरहत कें करैत रहैत अछि निहोरा
गिरहत ओकरा
टोभि देथि खेत मे
जाहि सँ ओ बनि सकय गाछ।

बिहनि कें पता अछि
धरतीक गर्भ मे

ओ सड़ि जायत, मरि जायत
तैयो बिहनि
हँसैत - मुस्किआइत
चलि जाइत अछि / धरतीक गर्भ मे
धैर्यक संग बिहनि
सड़ैत अछि गलैत अछि
धरतीक आँचर मे
पुनः अपन भविष्णुक काया मे
अवतरित होइत अछि बिहनि।

●●●

ओ बड्ड दुःखी अछि

ओ बड्ड दुःखी अछि
ओ दुःखी छथि
कारण कालिये हुनका
एकटा मोटगर-डँटगर सेठ
कोलर पकड़ि दुइ चटकन दऽ
निकालि देलकैक नौकरी सँ
ओकरा दऽ देलकैक फरमान
ओ कत्तौ नहि कऽ सकय
अपन दुःखक इजहार
ओ ओकरा स्पष्ट कहि देलकैक
मरि जइहे तँ मरि जइहे
मुदा ककरो नहि कहियहि
हमर ई कुकृत्य।

ओ बड्ड दुःखी अछि
ओकरा बड्ड पैघ धमकी भेटल अछि
अपन दुःख कें कत्तौ साझी करबाक बदला
उठा लेल जेतैक ओकर पत्नी आ जवान बेटी
ओ बड्ड दुःखी अछि
ओकर मुँह मे लागल अछि जाबी
हुनका पुलिसक बड्ड डर होइत अछि
ओ पुलिसक डंडा सँ मरम्मति करबाक
दऽ देनय अछि फरमान
ओ जेल जाए नहि चाहैत अछि
ओ चाहैत अछि
अपन साँस सदृश अपन पत्नीक
कऽ सकी पहरा
ओ चाहैत अछि
अपन सोन सन बेटीक
कऽ सकी सुरक्षा।

ओ अपन नोर सँ
बहाबऽ चाहैत अछि अपन दुःख
ओ रोकि लेने अछि अपन नोर
अपन आँखिक कटोरी मे
ओकरा किछु नञि सोहाइत अछि
ओंघरिया काटैत अछि
ओ कानि नञि पाबैत अछि
ओकर मुँह पर लागल अछि जाबी
आँखि पर लागल अछि प्रतिबंध।

●●●

नोर आ पियास

हमरा बड़ जोर पियास लागल अछि
हम पियास सँ बेकल छी
भाई अहाँक सुन्दर सुझाव
हमरा नहि अरघि रहल अछि
भाई अहाँ देखि रहल छी
हमर आँखि सँ झहरैत
नोरक निर्झर
अहाँ आत्मविश्वासक संग हमरा
कऽ रहल छी आश्वस्त जे
हमर पियास मिझेबाक लेल
हमर आँखि सँ झहरैत नोर
पर्याप्त अछि
भाई अहाँ सुखी-सम्पन्न रहितो
विवेकशून्य छी
अहाँके नोरक स्वाद
शायद पता नञि अछि
नोर पीबाक वस्तु नहि अछि
नोर होइत अछि नुनछराइन।

भाई ! अहाँ कें पता होयबाक चाही
नोर बहेवाक वस्तु छियैक
नोर छियैक कोशी-कमला-बलान
नोर पीबाक वस्तु नञि छियैक भाई
नोर छियैक दुःखक समुद्र
नोर पीबाक वस्तु नञि छियैक भाई
नोर छियैक इन्कलाबक फरमान
नोर कोशी-कमला-बलानक बाढ़ि छियैक
ई बहाऽ देत अन्यायक अट्टालिका के

ई समाऽ लेत शोषणक पहाड़ कें
पेट मे
भाई ! हमर आँखिक नोर
बनत एक दिन एकटा धधकेत शोला
जे जड़ाऽ कें छाउर कऽ देत
अन्यायक एहि जंगल कें।

●●●

दस टा आंगुर दस टा औंठी

हुनका दुई गोट हाथ अछि
हुनका दस गोट आंगुर अछि
हुनक दुई गोट हाथ आ दस टा आंगुर
कोनो खास बात नहि अछि भाई
खास बात ई अछि जे
हुनका पता अछि
गरीबक खून पीबाक तकनीक
खास बात ई अछि जे
हुनका पता अछि
गरीब कें बुरबक बनेवाक तकनीक
खास बात ई अछि जे / हुनका पता अछि
तमाम अनैतिकता कें
नैतिक कर्त्तव्य मे बदलबाक तकनीक
खास बात ई अछि जे
निर्दयता आ व्यभिचार हुनक आभूषण अछि।

आजुक अर्थतंत्री व्यवस्था मे
व्यवहारिक बनबाक लेल
समस्त लोक
हुनका सँ लऽ रहल अछि प्रशिक्षण
शायद हम भटकि रहल छी
अपन कविता मे
एहि कविताक मादे हमरा
कहबाक छल एक खास बात
खास बात अछि दुई गोट हाथ
खास बात अछि दस गोट आंगुर
हुनक दुई गोट हाथ आ दस गोट आंगुर
खास अछि
ई खास अछि एहि लेल जे
हुनक दस गोट आंगुर मे
हीरा जरल दस गोट सोनाक औंठी अछि।

एहि कठिन समय मे

एहि विकट परिस्थिति मे
अहाँ हमरा सँ
कऽ रहल छी विनम्र निवेदन
जे हम हँसी
हमर हँसी मे अहाँ
ताकि रहल छी ठहक्का
हमरा लेल हँसब असंभव अछि भाई
अहीं कहु भाई
हम कोना हँसब
बखरा-बखरा भऽ गेलैक सोवियत रूस।
साम्राज्यवादी ताकतक वटवृक्ष
भऽ रहल अछि झमटगर
लोक बिसरि रहल अछि अपन अस्तित्व
बुरबक बनि गेलाह गोर्बाचोव
बढ़ल जा रहल अछि पूँजीवादी ताकत
तखन जखन अहुँ भविष्यक संदर्भ मे
सोचबाक राखैत होयब सपना
अहुँ नहि हँसि सकब भाई
अपन भविष्णुक लेल सोचैत-सोचैत
अहुँ हमरे जकाँ सदिखन
कछमछाइत छिछियाइत रहब।

●●●

चिड़ै आ कवि

चिड़ै उड़ैत अछि आकाश मे
अपन सम्पूर्ण शक्ति सँ
डोलबैत रहैत अछि अपन पाँखि
चिड़ै चरौक खोज मे
भरि-भरि दिन
उड़ैत रहैत अछि आकाश मे
ओहिना जेना कोनो कवि
कल्पनाक दुनिया मे
ताकैत रहैत अछि
अपन कविताक लेल
एकटा बिम्ब
बिम्ब संधानल आ सार्थक
प्रतिकुल परिस्थिति सँ लड़बाक लेल
हथियारक शक्लक एकटा कविता।

•••

परिवर्तन

समय करवट लऽ रहल अछि
असंख्य कम्प्यूटरक हेंज
दौड़ल आबि रहल अछि
शहर नगर आ महानगर मे।

शहर, नगर आ महानगर
बनल जा रहल अछि
कम्प्यूटरक अप्पन जगह
मनुक्ख बिलाऽ रहल अछि
जनमि रहल अछि असंख्य दानव।

गाम लऽ रहल अछि शहरक रूप
कम्प्यूटर अपन साम्राज्य विस्तारक लेल
पहुँचि रहल अछि गाम
अन्नदाता भगवान आ माटिक लोक कें
खेहारि रहल अछि कम्प्यूटर सैन्य-दल
धांगि रहल अछि हरियर-कचोर खेत
लोक बनल जा रहल अछि कोढ़ि।

कम्प्यूटर कारी आ डेराओन मेघ सन लगैत अछि
ठनका-तड़का आ बिजुरीक संग
विचारधाराक माथ पर
बरसि रहल अछि
ई कम्प्यूटरीकृत मेघ।

मनुक्खक चिन्तन शक्ति
कम्प्यूटरक जेल मे
भऽ रहल अछि कैद

विवेकशून्यताक भऽ रहल अछि जन्म
साहित्यक विनाशक लेल
रचल जा रहल अछि
षडयंत्र पर षडयंत्र
संस्कृतिक मज्जर सँ महमहाइत आम्र तरु
भऽ रहल अछि नेस्त-नाबूद
देखा रहल अछि सर्वत्र
कम्प्यूटर-कम्प्यूटर आ कम्प्यूटर ...।

●●●

OPPO F7

हमरा लाज होइत अछि

जखन कविता लिखबाक अर्थ
शब्दक भ्रम-जाल बूनब हो
जखन कविता लिखबाक अर्थ
अपन पहिचान निखारब हो
जखन कविता लिखबाक अर्थ
अपन अहंकारक इजहार हो
जखन कविता लिखबाक अर्थ
पुरस्कारक तिकरम हो
जखन कविता लिखबाक अर्थ
अध्यक्षक आसन हो
जखन कविता लिखबाक अर्थ
नेताजीक भाषण हो
जखन कविता लिखबाक अर्थ
मंत्रीजीक शासन हो
तखन माफ करब भाई
कविता लिखबा मे
हमरा लाज होइत अछि।

●●●

स्वप्नक हत्या

जखन ककरो स्वप्नक
भऽ जाइत छेक हत्या
तखन ओकर छाती मे
भऽ जाइत छेक घाऽ
जहिना-जहिना
बीतैत जाइत छेक क्षण
गँहीर भेल जाइत छेक घाऽ।

●●●

गिद्धक कायान्तरण

गिद्ध झाड़दार चिड़ै छल
जखन कोनो माल-जाल मरि जाइत छलैक
ओहि ठाम पहुँचि जाइत छल गिद्ध
मालक लहासक खाल कें
जखन खलि लेत छल चमार
तखन पहुँचि जाइत छल गिद्ध
साफ कऽ दैत छलैक धरती।

आई गिद्ध/लऽ लेलक अछि मनुक्खक शक्ल
ओ/मरल मालक मरी नञि खाइत अछि
ओ खाइत अछि / जीयत मनुक्खक मासु
ओ साफ नञि करैत अछि धरती
ओ खाऽ कें करैत अछि निंघेस
घिनाऽ गेल अछि धरती
गन्हाऽ रहल अछि धरती
ओ एहि दुर्गंध कें
सुंघैत अछि इत्र जकाँ
अगरायल-इतरायल ठाढ़ अछि धरती पर
निर्लज्जक प्रतिरुप जकाँ।

●●●

F7

आदमी आ शब्द

आदमी शब्द होइत अछि
शब्द होइत अछि आदमी
मुदा आदमी आ शब्दक ओ सम्बन्ध
हमर आत्मा कें चौंका दैत अछि
जतय देखाइत अछि/आदमी
शब्द मे इन्सान अछि
मुदा/आदमी
स्वयं मे बेइमान अछि।

●●●

विनिमय

अहाँ साहित्य रचु / आ दऽ दियऽ हमरा
अहाँ जे रचि रहल छी
कविता, कथा आ उपन्यास
ई सभ निरर्थक अछि अहाँक लेल
अहाँ ई रचना अपना लग राखि
की करब भाई
चेहरा सुखि गेल अछि / आँखि धँसि गेल अछि
लबि गेल अछि डाँड़/झड़ि गेल अछि केश
भूखल-पियासल सदिखन
लिखैत रहैत छी साहित्य
अपन समस्त सुख-सेहन्ता कें
पठा देने छियै/सात समुद्र पार।

हम ओहिना नञि माँगि रहल छी रचना
हम टाका देब / मुँह मांगल टाका
अहाँ अपन समस्त रचना
दऽ दियऽ हमरा
समस्त दुःख दूर भऽ जायत भाई
लिअऽ ई टाकाक गड्डी
दऽ दियऽ अपन रचना।



कविता आत्मा मे नञि नुकाइत अछि

कविता कखनहुँ
नञि नुकाइत अछि आत्मा मे
कविता सरेआम
दौड़ैत अछि
बाट आ चौबाट पर।

कविता सरेआम
बाट आ चौबाट पर।
चिकरैत अछि
गरजैत अछि
करैत रहैत अछि सदिखन
प्रतिवादक इजहार।

कविता लड़ैत रहैत अछि सदिखन
परम्पराक रुढ़िगत स्वरूप सँ
कविता करैत रहैत अछि प्रशस्त
प्रगतिशीलताक चकरगर बाट
कविता धधकैत मशाल सन
परिवर्तनक अग्रदूत जकाँ
आगाँ बढ़ैत रहैत अछि
बाट आ चौबाट पर।

कविता बाढ़िक आतंक व
सुखारक पीड़ा सँ
कखनहुँ नञि होइत अछि त्रस्त
कविता अपन बाटक समस्त बाधा सँ
लड़ैत अपनहि
तय, करैत अछि
आगाँ बढ़बाक बाट
कविता कखनहुँ
नञि नुकाइत अछि आत्मा मे
कविता सरेआम

दोड़ैत अछि
बाट आ चौबाट पर।

कविता कखनहुँ
डेराइत नञि अछि जातीय दंगा सँ
महगी सँ कखनहुँ
हारैत नञि अछि कविता
पेट मे धधकैत जठराग्नि लग
पस्त नञि होइत अछि कविता
कविता जीतक असीम आशाक संग
एहि सँ लड़ैत अछि
कविता कखनहुँ
नञि नुकाइत अछि आत्मा मे
कविता सरेआम
दौड़ैत अछि
बाट आ चौबाट पर।

कविता हरवाहक लागनि कें
कविता कोदारिवाहकक कोदारि कें
धूर-धूसरित मजुरनीक हाथ कें
खुरपी आ हाँसु कें
दऽ दैत अछि मशालक शक्ल
कविता कखनहुँ
नञि नुकाइत अछि आत्मा मे
कविता सरेआम
दौड़ैत अछि
बाट आ चौबाट पर।

कविता शोषण सँ
लैत अछि सीधा मोर्चा
कविता शोषण कें कऽ दैत अछि
नेस्त-नाबूद
कविता शोषितक आह कें
दऽ दैत अछि इन्क्लाबक शक्ल
कविता/रौद मे जरैत

आ ठंड मे जमेत
मेहनतियाक खून कें
दऽ देत अछि आगिक शक्ल
कविता कखनहुँ
नञि नुकाइत अछि आत्मा मे
कविता सरेआम
दौड़ैत अछि
बाट आ चौबाट पर।

कविता / घास छिलैत काल
खेत कमबैत काल
खुरपी-कचिया चलबैत काल
मजुरनीक चूड़ीक खनखनाहटि व
मुँहक गुनगुनाहटि कें
दऽ देत अछि इन्क्लाबक स्वर
कविता/भैंसवारक मुँह सँ बहराइत
भगति आ परातीक टोन कें
दऽ देत अछि इन्क्लाबक शक्ल
कविता/जाँत चलाबैत काल
मजुरनीक मुँह सँ बहरायल गीत व
जाँतक धरधराहटि कें
बनाऽ देत अछि क्रांतिगीत
कविता नारी मुक्तिक पीड़ा कें
बनाऽ देत अछि परिवर्तनकामी अस्त्र
कविता कखनहुँ
नञि नुकाइत अछि आत्मा मे
कविता
नवका भोरक प्रतीक्षा मे
तकेत रहैत अछि उपयुक्त बाट
कविता दिशाहीन नञि होइत अछि
कविता निर्भीकता सँ
बढ़ैत रहैत अछि आगाँ
आगाँ-आगाँ आओर आगाँ।

●●●

परम्परा

हे परम्परा
अहाँ प्रणम्य छी
कारण अहाँ एकटा प्रकाश पूंज छी
जाहि सँ
छँटि सकैत अछि
अपसंस्कृतिक अन्हार
अहाँ सहजतापूर्वक कऽ सकै छी प्रशस्त
प्रगतिशीलताक बाट
मुदा / ई की भऽ रहल अछि
अहाँ बनल जा रहल छी रुढ़ि
हम सभ कऽ रहल छी संगोर
जे हम सभ कऽ सकी
अहाँक रुढ़िक अट्टालिका कें
नेस्त नाबूद।

●●●

F7

कविताक दोकान

हुनका कोटि-कोटि टाका छन्हि
आलीशान फ्लेट छन्हि
हुनक गात्र-गात्र मे
भरल अछि लबालब खून
फूलल अछि गाल आ तोंद
क्लीन सेभ मे लगैत अछि स्मार्ट
अनमन राजकुमार सन
पहिरि लेने छथि
चमचम करैत फोटोक्रोमिक शीशा-युक्त
दामी फ्रेमवला चश्मा।

फ्लेटक प्रांगण मे
घूमैत छथि सदिखन
चायक चुस्कीक संग
देखैत छथि टी.वी.
टी.वी. पर आबैत छथि
दीन-हीन काया युक्त कवि
जठराग्नि मे झड़कल शब्द सँ
गुंजित होइत अछि टी.वी. स्क्रीन
उद्घोषक बनबैत अछि प्रशंसाक पुल।

फ्लेट मे बैसल ओ देहगर लोक
बहराइत अछि घर सँ
ड्राइवर गैरेज सँ
बहार करैत अछि चमचमाइत फियेट
ओ जाइत छथि बाजार
बोआइत छथि / ढ़हनाइत छथि
बाजार सँ बाजार
दोकान सँ दोकान
मॉल सँ मॉल
ताकैत छथि कविताक दोकान

एखन धरि हुनका
नहि भेटल छन्हि
कविताक दोकान।
ओना ओ आश्वस्त छथि
वैश्वीकरणक एहि दुनिया मे
ओ अवस्से ताकि लेताह बाजार
कविताक बाजार
ओ ताकि लेताह मॉल
मॉल मे कविताक दोकान

●●●

पता नञि

अहाँ हमर प्राण हरि लेब
पता अछि हमरा
अहाँ हमर कविता चोरा लेब
पता अछि हमरा
अहाँ हमर कविता कें बदलि लेब
पता अछि हमरा।

भाई ! अहाँक एहि कुकृत्य सँ
हमर कोनो हानि नहि होयत
पता अछि हमरा
अहाँक एहि कुकृत्य सँ
हमर कविताक बाल बाँका नञि होयतैक
पता अछि हमरा।

पता नहि कियेक
हमर आँखिक आगू
पसरि गेल अछि
चिन्ताक घोर अन्हरिया
जे एहि कुकृत्य सँ
अहाँक हानि होयत
छुच्छे हानि।

●●●

षडयंत्र

ओ अहाँक मित्र छल
बूझल अछि हमरा
आब ओ हमर मित्र अछि
बूझि लिअऽ एकरा।

अहाँ हुनक लगीच रहै छी
नीक नञि लगैए हमरा
ओ अहीं जकाँ निश्छल छथि
बूझल अछि हमरा।

ओ हमर मित्र छथि
हमरे सन बनताह
छल-छद्म आ साम-दण्डक
अट्टालिका ओ गढ़ताह।

अहाँ बेर-बेर
हुनका लग जाइ छी
निश्छलताक मंत्र सँ हुनका
अभिमंत्रित करै छी
सत्ते कहै छी
अहाँक ई सुचालि
हमरा मिसियो भरि
नीक नञि लगैए।

एकटा बात बूझि लिअऽ
जे हमर मित्र बनैत अछि
से ककरो मित्र नहि भऽ सकैए
हे ! देखि रहल छी
अहाँ बड्ड जिदियाह छी
अहाँ हुनकर ब्रेन वास कऽ रहल छी

लाख मना करबाक बादो
अहाँ परतेल नहि करै छी
कालिआ अहाँ
हुनका लग गेल रही।

सुनि लिअऽ कान खोलि कँ
आब जखन अहाँ जेबाक प्रयास करब
तँ अहाँक टाँग कँ
गृहस्थी डाँग सँ तोड़ि देब
तैयो जखन अहाँ
अपन सुविचार सँ
आवेशित करैत रहब हमर मित्र कँ
तखन हम
अहाँक कपार फोड़ि देब।

●●●

आदमीक आकारक नव मानदण्ड

आइ मनुक्खक आकार
तय करैत अछि
अर्थ, बाजार आ व्यापार।

आइ मनुक्खक आकारक निर्धारणक लेल
इमानदारी, नैतिकता आ सच्चरित्रता
अर्थहीन पहेली सन भऽ गेल अछि
आइ मनुक्खक आकार निर्धारित करैत अछि
बेइमानी, अनैतिकता आ दुश्चरित्रता।

अहाँ जतेक बेसी उच्छृंखल छी
सत्ते ततेक बड़का लोक छी
अहाँक तिजोरी मे जतेक बेसी टाका अछि
ततेक सम्मानित लोक छी अहाँ।

अपन कद कें नम्हर करबाक लेल
अहाँ वयस के चिन्ता करै छी
एकर चिन्ता जुनि करु
अहाँ लग टाका अछि आ
अहाँ दु दिनक नेना छी
ई टाका अहाँ कें बुजुर्ग बनाऽ देत
अस्सी वर्खक बुढ़
अहाँ आगु नेना भऽ जयताह
आ ओ
अहाँक चरण-स्पर्श करताह
टाकाक गड्डी पर ठाढ़ भऽ जाउ
अहाँक कद ओहिना नम्हर भऽ जायत
ध्यान रहय
टाकाक गड्डी
बेस ऊँच रहबाक चाही

टाका कमेबा मे बड्ड कष्ट अछि
खून-पसेना एक करऽ पड़ैत अछि
एकर चिन्ता जुनि करु
एकर चिन्ता तँ ओ करैत अछि
जकरा अपन कदक चिन्ता नञि अछि
ओ तँ कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन
पर विश्वास करैत अछि
अहाँ तँ शोषण दमन आ अत्याचारक तकनीक
नीक जकाँ जानै छी
तखन कष्टक चिन्ता करबाक की जरुरति
अहाँ अपन कदक लेल बेस चिन्तित छी
तखन टाकाक गड्डी कें ऊँच करैत जाऊ
ऊँच-ऊँच आओर ऊँच
एवरेस्टो सँ बेसी ऊँच।



सहजताक मर्म

ओ सहज अछि
चाम खींचि लिअऽ हुनक
चाम खींचि लिअऽ हुनक एहि लेल
जे / ओ किछु नहि बाजत।

ओ सहज अछि
तोड़ि दियो ओकर टाँग
तोड़ि दियो ओकर टाँग एहि लेल
जे / ओ किछु नहि बाजत।

ओ सहज अछि
निकालि लिअऽ हुनक आँखि
निकालि लिअऽ हुनक आँखि एहि लेल
जे / ओ किछु नहि बाजत।

ओ सहज अछि
काटि लिअऽ हुनक जीह
काटि लिअऽ हुनक जीह एहि लेल जे
जे / ओ किछु नहि बाजत।

ओ सहज अछि
काटि लिअऽ हुनक आँगुर
काटि लिअऽ हुनक आंगुर एहि लेल
जे / ओ किछु नहि बाजत।

ओ सहज अछि
छीनि लिअऽ हुनक कलम
छीनि लिअऽ हुनक कमल एहि लेल
जे / ओ किछु नहि बाजत।

PO F7

ओ सहज अछि
हुनक समस्त कविता कें
कऽ लिअऽ अपन नाम
हुनक कविता कें कऽ लिअऽ अपन नाम
एहि लेल
जे / ओ किछु नहि बाजत।

ओ सहज अछि
त्यागि सकैत अछि अपन खुशी
दोसराक दुःख दूर करबाक लेल
छीनि लिअऽ हुनक सभ खुशी
एहि लेल
जे / ओ किछु नहि बाजत।

ओ सहज अछि
अपन पहिचानक चिन्ता
नहि छन्हि हुनका
हुनक पहिचान कें
माटि मे मिलाऽ दिओक एहि लेल
जे / ओ किछु नहि बाजत।

●●●

OPPO F7

हे कलमकार !
अहाँ बन्न करु हमर बलात्कार
इतिहासो मे सदिखन
हमर उपयोग होइत रहल अछि
आब हम ठानि लेने छी
अहाँक लेल हम
कित्रहु नञि बनब
फैशनक कोनो बस्तु।

हम ई महसुसि रहल छी जे
अहाँ हमरा बजाबै छी
मदिराक दुर्गन्धक मध्य
अहाँ कऽ दै छी हमरा नग्न
हमर गाल पर
अहाँ लैत रहै छी चुम्मा बेर-बेर
अहाँ सदिखन हमरा
भरैत रहै छी आलिंगन।

हे कलमकार !
अहाँ कें पता होयवाक चाही
जे हमर इच्छा अछि
जे हम / बनि सकी मशाल
धधकि सकी हम
अहाँक अन्तरक दुश्चरित्रता कें
कऽ सकी सुड्डाह।

हे कलमकार !
हम ई नहि चाहैत छी जे
बनि सकी
निरालाक कैपिटलिस्टक
कोटक गुलाब

हम चाहै छी
करैत रही सदिखन
असंख्य गोबरछत्ताक गुणगान
पचा सकी अपन भीतर
संघर्षक समस्त ऊर्जा।

हे कलमकार !
अहाँ कें पता होयबाक चाही
जे हम हथियार छी
अहाँ जे बेर-बेर
बजावै छी हमरा
शराबक सजल टेबुल पर
से हमरा नहि नीक लगैत अछि।

•••

निर्लज्ज

ओ निर्लज्ज अछि
निर्लज्जता अछि ओकर परिचय
एहि शहर मे ओकरा
ठग-बेइमान आ भ्रष्टाचारीक
भेटल अछि उपाधि।

ओ बेरोजगार नहि अछि
ओ लाचार नहि अछि
ओ अछि कामचोर
अपन चेहरा पर
चढ़ाऽ लेने अछि
छद्म विद्वताक मुखौटा

ओ दिन भरि
करैत रहैत अछि
लक्ष्मीसुतक पूजन-अर्चन
ओ बौआइत रहैत अछि
अर्थ-अर्जनक धंधाक लेल
एतय-ओतय ढहनाइत रहैत अछि।

●●●

आवागमन

भोरे-भोर आकाशक पुरुब क्षितिज पर
दमकैत अछि गढ़गर लाल रंग
शनै: शनै: विलीन होमय लगैत अछि
आकाशक रक्ताभ अलख
अभरऽ लगैत अछि
चमकैत पितरिया थारी सन
गोल मटोल प्रकाश पुंज
पिरथीक समस्त जीव जन्तुक
निद्रा कें अनिद्रा मे बदलैत
सुरूज प्रारंभ करैत अछि अपन यात्रा।

सुरुज कोनो जिम्मेदार बाप सन
अपन संतान गाछ-बिरिछ-घास-पात लेल
परसैत अछि भोजन
सुस्तायल पिरथीक आत्मा मे
करैत अछि उत्साहक संचार
करैत अछि धरती पर
मात्र मनुक्खक लेल नहि
समस्त जड़-चेतनक लेल
इजोतक बर्खा
इजोत पसरल रहैत अछि धरती पर
भोर सँ दुपहर, दुपहर सँ साँझ
फेर राति वितलाक उपरान्त
पुन: भोर मे बालारुण दिवारास
दमकैत पहुँचि जाइत अछि
विशाल अम्बर पर
अनवरत चलैत रहैत अछि यात्रा
भोर सँ दुपहर-दुपहर सँ साँझ।

•••

सहानुभूतिक गणित

हमर धँसल आँखि आ चोकटल गाल देखि
ओकर आँखि सँ बहरा रहल अछि
घृणाक घिनाओन दृष्टि
ओकरा ई विश्वास भऽ गेल अछि
हम लाचार आ बेचारा छी
ओ ठगि-फुसला कें
धनार्जन करबाक तकनीक मे
छथि बेस निपुण
ओकरा ई विस्वास भऽ गेल अछि
हमरा लग कविता छोड़ि
आओर किछु नञि अछि
ओकरा ई विश्वास भऽ गेल अछि
हमरा सँ नहि भेटि सकतनि
एक्कोटा थुर्री पाइ।

ओ लाचार भऽ
असमंजस मे
हमरा सँ आँखि चोरेबाक
कऽ रहल अछि प्रयास
ओ बाजेत अछि हमरा लेल
एकटा सहानुभूति शब्द
ओह ! अहाँ बड्ड तकलीफ मे छी
ओकर घृणासिक्त आँखि
आ छद्म सहानुभूति सँ
धधकऽ लगेत अछि हमर हृदय
हम पछताइत छी
आ सुनैत रहैत छी
कृत्रिम भाव सँ सम्पृक्त
छद्म सहानुभूतिक शब्द

ओ एतबे पर नहि रुकैत अछि

ओ पूछैत अछि कारण
हमर लाचारीक कारण
जखन हम कहैत छियैक
अपन टॉर्चरिंगक बात
ओ होइत छथि परेशान
ओकर चेहरा कें पढ़ल जा सकैये
आसानी सँ
ओ प्रसन्न छथि अन्तर सँ
हमरा एकटा जाल मे फँसल
माँछ बूझैत अछि
चुआबैत अछि
मगरमच्छक नोर
अन्त मे करैत अछि आग्रह
अहाँ हमर नौकर बनि जाऊ
अहाँक कल्याण भऽ जायत।

•••

सत्य अछि प्रेम

मीता !
अहाँ बहि रहल छी
हमर नश मे रक्त जकाँ।

मीता !
हमर धमनी मे अहीं
कोशीक बाढ़ि जकाँ
उमरि रहल छी बेरि-बेरि।

हमर हृदयक धड़कन मे
अहीं धड़केत छी मीता
स्वप्न मे अहीं
उतरे छी हमर छाती मे
हिमालयक उत्तुंग शिखर सँ
उतरैत गंगा जकाँ।

मीता !
अपन व्यस्तता मे
अहाँ कें हम
कहाँ बिसरि पाबे छी।

व्यस्तता मे मीता !
आओर बेसी
मोन पड़ै छी अहाँ।

मीता !
अहाँक यादिक बरछी
हमर हृदय कें
कऽ देनय अछि लहुलोहान।

मीता !
सिहकैत वसात मे

अहाँ करै छी स्पर्श
हमर देह कें
वसंती बयार जकाँ।

मीता !
अहाँक यादि
हमर छाती पर
लिखि रहल अछि
कोटि सहस्त्राब्दिक इतिहास गाथा।

मीता !
अहाँक स्मृति मे
एक-एक पल
बनैत अछि
कोटि-कोटि बर्खक इतिहास।

मीता !
एहि महानगरीय संत्राश मे
अहाँ उतरै छी
सदिखन हमर छाती मे
अहीं छी हमर जीवन
अहीं छी हमर धड़कन।

मीता !
अहाँक यादि
रित्ती-रित्ती / कऽ देनय अछि
हमर भ्रम जाल कें
सलहेश - कुसुमा
नल - दमयन्ती
हीर - रांझा
आओर कतेक
जकर प्रेम गाथा कें

मानैत छलहुँ फुसि
आई हमर हृदय
दुत्कारि रहल अछि
एहि भ्रम बोध कें।

मीता !
सत्य अछि प्रेम
सत्य छी अहाँ
सत्य अछि अहाँक ओ यादि
जे बेरि-बेरि
उतरि रहल अछि हमर छाती मे
हिमालयक उत्तुंग शिखर सँ
उतरैत गंगा जकाँ।

●●●

गिद्ध

हमर आँखिक आगू
ठाढ़ अछि एकटा विशाल वटवृक्ष
एकर असंख्य डारि
पसरल अछि चहुँ दिस
ई डारि पहिरि लेनय अछि
हरियर कचोर पात।

एहि गाछ पर
बैसल अछि एकटा गिद्ध
गिद्ध कें लोल नहि अछि
चाँगुर सेहो भऽ गेल अछि निपत्ता
एहि गिद्ध कें नहि अछि पाँखि।

चाँगुर, लोल आ पाँखि विहीन ई गिद्ध
उड़ैत रहेत अछि चारू कात
एकरा दू टा आँखि अछि
एकटा नाक अछि
लोल लऽ लेनय अछि
बत्तीसो दाँतक शक्ल
एहि गिद्धक मुँह सँ
लटकि रहल अछि
पाँच हांथक जीह
अपन उदर में
सैंति के राखनय अछि
बहत्तर हाथक अँतरी।

कखनहुँ काल लोक कें
भऽ जाइत अछि ई भ्रम
ओ लऽ लैत अछि निर्णय
ई साँचे मनुक्ख छी
कारण मनुक्खे सन
लागि रहल अछि एकर काँति।

ओना लोक

OPPO F7

एहि बात सँ / भऽ जाइत अछि आश्वस्त
जे ई मनुक्ख नञि अछि
मनुक्ख किन्नहु नञि
अपन स्वार्थ पूर्ति हित
कऽ सकै यै
अनकर अस्तित्व हरण
ई तँ लाभ-लोभक लेल
पीवि सकै यै निबुधनक रक्त
अपन शान बघारबाक लेल
ओ समस्त मनुक्ख कें
बनाऽ सकै यै लहास
ई सत्ते / लोल-चाँगुर आ पाँखि विहीन
एकटा गिद्ध अछि।

पुनः लोक
निहारऽ लगैए विशाल वट वृक्ष
वटवृक्ष
मल्टीनेशनल कम्पनीक बीया सँ
अँकुरल एकटा गाछ
गाछ छुने जा रहल अछि आकाश
गाछ मे बहराय लागल अछि
असंख्य पौनकी
पौनकी छितरि कें
भेल जा रहल अछि गोल-गोल पात।

वटवृक्ष पर बैसल गिद्ध
अपन बत्तीसो दाँत निपोरने
हँसि रहल अछि
एकटा घिनाओन हँसी
पसरि रहल अछि
एकटा घिनाओन खिलखिलाहटि
सम्पूर्ण वातावरण मे
पसरि रहल अछि जहर।

●●●

गामक कवि मित्रक नाम एकटा कविता

गामक कवि मित्रक नाम एकटा कविता

भाई ! एहि महानगरीय संत्राश मे
जीवनक भागम भाग मे
संवेदना विहीन समाज मे
जखन मोन पड़ैत अछि गाम
गामक सोहार्द
तखन अनायास
स्मरण आवि जाई छी अहाँ
सोचऽ लगै छी अहाँक संदर्भ मे
अहाँ लिखैत हैब कविता
अवस्से लिखैत हैब कविता
कविताक लेल
ताकैत हैब विषय अवस्से
दुआरि पर बान्हल भैंस
गोरी मे बान्हल बरद
आ डिकरैत गाय पर
कविता लिखवाक लेल
सोचैत हैब अवस्से।

भाई ! अहाँ कविता लिखैत हैब
अवस्से लिखैत हैब कविता
खम्हारक मेंह पर बैसल फुद्दी
ओहि मे बान्हल धनसीसा पर
लुब-लुब करैत ओकर लोल पर
अटकल होयत अहाँक आँखि
मेंहक चारु कात घुमैत बरद
आ पाँजक पाँज धान कें
धांगैत ओकर पयर पर
कविता लिखबाक लेल
सोचैत होयब अवस्से।

टी.वी. पर देखाइत होयतैक

अमेरिकाक वर्ल्ड ट्रेड सेंटर
ध्वस्त होइत ट्रेड-स्तुप
मंडराइत गिद्ध आ हाइजेकक साम्यक लेल
प्रतीक ताकेत होयब अवस्से
सुपर पावरक कुटनीति आ
ऐतिहासिक औद्योगिक परिप्रेक्ष्य पर सोचैत
अहाँक दिमागक नश तनाइत हेत अवस्से
सुपर पावर बनबाक महत्वाकांक्षाक संग
ऐतिहासिक ढंग सँ गढ़ाइत
एकटा धरगर आ लपलपाइत तरुआरि
आ उजरा परवाक कतरल पाँखिक/संदर्भ मे सोचैत
अहाँ साँप-छुछुन्नरिक फेर मे
पड़ि जाइत होयब अवस्से
निरीह अफगानी जनताक अस्तित्वक लेल
अहाँक हृदय मे जगह होयत
आ अहाँ व्यस्त होयब
एकटा एहन हथियार गढ़बाक लेल
जाहि सँ भऽ जाइ ध्वस्त
सुपर पावर आ आतंकवादक विशाल अट्टालिका
से हम सोचि रहल छी
अहाँ कविता लिखबाक जोगार मे
लागल होयब अवस्से।

भाई/संसद भवन कें ध्वस्त करबाक साजिश
आ पाकिस्तानक दोहरा नीति
अमेरिकाक कुटनीतिक कुचक्र
आ भारत सरकारक नपुंसकता
पत्रकारक असुरक्षा / आ
जनताक तटस्थता
अहाँ कें त्रस्त करैत होयत अवस्से
आ अहाँ
एकटा कविता लिखबाक लेल

सोचैत होयब अवस्से।

भाई/आजुक बदलल दुनिया
जतय आपकता भऽ गेल अछि नेस्त-नाबूद
भाइये-भाइक खून के
स्वादि-स्वादि पीबैत अछि
आ होइत अछि प्रसन्न
गाम बदलल जा रहल अछि शहर मे
शहर बदलल जा रहल अछि जंगल मे
जंगल मे घुमैत अछि
आतंकक शेर आ ईर्ष्याक भेड़िया
एहि संदर्भ मे सोचैत अहाँ
फेर घुरि जाइत होयब दलान दिस
निहारऽ लगैत होयब चौपाल कें
जाहि ठाम होइत हो हँसी-ठट्ठा
तुरत्ते मोन मुटाव आ तुरत्ते राग-भाव
अहाँ पुनः निहारऽ लगैत होयब बथान दिस
जाहि ठाम / बरद-भैंस आ गाय
अपन मालिक कें देखि
डोलबैत अछि सींग
डोलबैत अछि नांगरि
देहक गत्र-गत्र मे
अभरऽ लगैत अछि
प्रसन्नताक महासमुद्र।

भाई/अहाँ पुनः सुनऽ लगैत हैब
मुंडेर पर कॉव-कॉव करैत कौआक स्वर
अहाँ देखऽ लगैत हैब खम्हार
दूर-दूर धरि पसरल खेत
खेत मे हरियर-हरियर गाछ
गामक कात मे बाध
बाधक कात मे धार

धारक ओहि पार मे बाध
दूर-दूर धरि पसरल खरहोर
आमक गाछी आ खेरबन्नी
अहाँ सोचऽ लगैत होयब सते
एहि ठाम जीवैत अछि
उज्जर परवा
नहि कतरल गेल अछि पाँखि
मिठास सँ भरल गुटर-गूँक मन्द स्वर
पसरि रहल अछि गाम मे
आ अहाँ सोचैत होयब
लिखल जाई एकटा कविता
गाम नञि भऽ जाई बाजार
ताहि लेल अहाँ रचैत हैब
एकटा सम्पूर्ण कविता
बाजैत होयब असंख्य वक्तव्य
गढ़ैत हैब
बाजारवादी दानवक हत्याक लेल
असंख्य हथियार
रंगैत होयब असंख्य पोस्टर
पोस्टर पर लिखैत होयब नारा
आ भाई
अहाँ रचैत हैब कविता
अवस्से लिखैत होयब
असंख्य कविता।

●●●

थपड़ी मारऽ

रूस टूटले
थपड़ी मारऽ
कोमनिस्ट के गढ़ टूटले ये
थपड़ी मारऽ
पूँजीवाद कें गांटी लाल
थपड़ी मारऽ
दूधक जगह
जहर आब लेतै
थपड़ी मारऽ
भाग जगले
शोषक दल के
थपड़ी मारऽ
गोर्बाचोबक बुद्धि फेल
थपड़ी मारऽ
नोबेल प्राइज भेल सोकाज
थपड़ी मारऽ
लेनिन के बुधियारी फेल
थपड़ी मारऽ
मरकस बाबा गेल निखतर
थपड़ी मारऽ
चीन तँ अपने फेर मे लागल
थपड़ी मारऽ
दुनिया अछि हम्मर मुट्ठी मे
थपड़ी मारऽ
गणतंत्री देशक कोनो ठौर नञि
थपड़ी मारऽ
अर्थशास्त्र बाजारक चलतै
थपड़ी मारऽ
स्टालिन के गंजन भेलै
थपड़ी मारऽ
माओ नञि छे जे किछु करतै

थपड़ी मारऽ
गरीब देश के पैसा नहि छै
थपड़ी मारऽ
खिज्जा देश पर धौंस जमेबै
थपड़ी मारऽ
रथ रजतंत्री रेस मे चलेत
थपड़ी मारऽ
पूंजीवादी खून सुरकतै
थपड़ी मारऽ
अमेरिका आब दादा बनतै
थपड़ी मारऽ
जापानक बाजार पसरतै
थपड़ी मारऽ
दुनिया मे आतंकक शासन
थपड़ी मारऽ

•••

उजरा परवाक खोज

उजरा परवाक उज्जर रंग
आ ओकर निश्छलता कें
देखवाक लेल
आकुल अछि हमर नेत्र
गुटर-गूँक मधुर स्वर कें
सुनवाक लेल
बेकल अछि हमर कान।

उजरा पाँखिक फरफराहटिक स्वर कें
सुनबाक लेल
कहिया सँ लगौने छी आश।

उजरा परवा कहाँ अछि हमर देश मे
कहाँ देखि पबै छी
उजरा परवा कें
एहि ग्लोब पर?

क्षत-विक्षत भेल
पिरथीक विशाल वक्ष
कुहरि रहल अछि
कइयेक शताब्दी सँ।

कइयेक शताब्दी सँ
इतिहासक विशाल आँगन मे
गिद्धक हेंज
आपस मे
कऽ रहल अछि कटाउँझ।

कहिये सँ तें,
अनेकानेक आक्रामक राक्षसक

होइत रहल आगमन
हमर विशाल पिरथी पर।

इतिहासक पन्ना
कहिये सँ
भऽ रहल अछि रक्त-रंजित।

ओना बूझल अछि हमरा
उजरा परवा कें
नहि सोहाइत अछि
शोणित सँ पोतल
पिरथीक विशाल वक्ष।

उजरा परवा
कहिये सँ
औना रहल अछि
देखऽ लेल
हरियर कचोर पिरथी
आ
मांस-मज्जा सँ पुष्ट
प्रत्येक मनुक्खक काया।

कखनहुँ बहराइत अछि
शस्त्र सुसज्जित असंख्य हाथ
पूब सँ पश्चिम दिस
आ पश्चिम सँ पूब दिस
शस्त्र सुसज्जित ई हाथ
ताकि रहल अछि
निरीह, निवुधन आ मेहनतियाक
पवित्र काया।

काल्हिये तँ
वर्ल्ड ट्रेड सेंटर कें
ध्वस्त कऽ देनय छल
ई अस्त्रायुधयुक्त राक्षस
आ फेर
मचि गेल छल
आतंकक साम्राज्य
अफगानी धरती पर
निरीह मानवता कें
ध्वस्त करबाक साजिश
भऽ गेल छल कामयाब।
उजरा परवा
एहि दानवक
हृदयक क्रुरताक रंग कें
दया आ करुणाक रंग सँ
रंगऽ चाहैत छल।

मुदा/तानाशाहक मद मे मातल
सुपर पावर
इतिहासक गति कें
अपन गतिक हिस्सा
बनबऽ मे व्यस्त छल।

विशाल पिरथी कें
धर्म आ अर्थक
विशाल छत्रक नींचा
ठाढ़ करबाक
महत्वाकांक्षाक मद मे मातल
सुपर पावर
उजरा परवाक पाँखि कतरऽ मे

भऽ गेल अछि सफल।

इराकक धरती कें धाँगैत / ई सुपर-पावर
विश्व-विजयक पताका
फहरावऽ चाहैत अछि
सम्पूर्ण ग्लोब पर।

ओना हमरा आशा अछि
हम अवस्से सुनि पायब
उजरा परवाक
गुटर-गूँक मधुर स्वर
आ अवस्से देख पायब
उजरा परवाक उज्जर रंग

●●●

अहाँ हमर भाई छी

भाई !
हमर मोन तँ इयेह कहेत अछि जे
अहाँ लग अवस्से अछि एकटा समुद्र
कियेक तँ / अहाँ हमर मित्र छी
अहाँ हमर सहयात्री छी
अहाँ हमर भाई छी
छी हमर समानधर्मा।

भाई !
हमर मोन तँ इयेह कहेत अछि
अहाँ लग अवस्से अछि पहाड़
कियेक तँ / अहाँ हमर मित्र छी
अहाँ हमर सहयात्री छी
अहाँ हमर भाई छी
छी हमर समानधर्मा।

भाई !
हमर मोन तँ इयेह कहेत अछि
अहाँ लग अवस्से अछि
महानगरीय संत्राश
कियेक तँ / अहाँ हमर मित्र छी
छी अहाँ हमर सहयात्री
अहाँ हमर भाई छी
छी हमर समानधर्मा।

भाई !
हमर मोन नहि मानेत अछि जे
अहाँ लग नञि अछि दुःखक महासमुद्र
कियेक तँ
अहाँक गामक सीमान पर
उदास ठाढ़ सहस्त्र डारि पाकड़ि पर
झोहरि करैत अछि
हजार-हजार कचबचिया

आ ओकर झोंहरि
अहाँक भीतर एक-एक कें पैसि गेल अछि
आ अहाँ चाहै छी जे
बिरों उड़ा कें लऽ जाई
अहाँक सोच आ परिकल्पना
अहाँक एहि आकांक्षाक सपना मे
नुकायल अछि हमर सभटा मुक्ति-परिकल्पना
कियैक तँ / अहाँ हमर मित्र छी
छी हमर सहयात्री
अहाँ हमर भाई छी
छी हमर समानधर्मा।

भाई !
हमर मोन नञि मानैत अछि जे
अहाँ लग नहि अछि कोनो सेहन्ताक पहाड़
कियैक तँ अहाँ
अपन सभटा रंग-रभस आ खटरास कें
देमऽ चाहैत छी आजन्म वनवास
मुदा भऽ रहल अछि हमरा सन्देह/जे
कोना जनमि सकल अहाँक हृदय मे
सभटा रंग-रभस आ खटरास
कियेक तँ ओहिना जहिया अहाँ
थाम्हि लेनय होयब कलम
कविता लिखबाक
करऽ लागल होयब सुर-सार
बिलाऽ गेल होयत
सभटा रंग-रभस आ खटरास
कियैक तँ / अहाँ हमर मित्र छी
छी हमर सहयात्री
अहाँ हमर भाई छी
छी हमर समानधर्मा।

भाई !

हमर मोन नहि मानैत अछि जे
अहाँ लग नजि अछि
कोनो महानगरीय संत्रास
ओना अहाँ कें लागि गेल अछि
संत्रासक बिखाहि नदी कें
हेलि कें पार कऽ लेबाक लुतुक
अहाँ कें पता होयत अवस्से
एकरा गुप्त रखबाक बात मे
हमरा कोनो छद्म भाव अभरैत अछि
तैयो अहाँ नदीक उत्स बिन्दु कें
थाहबाक कऽ रहल छी प्रयास

आ हम
नदीक अतल तल मे डुबल पानि कें
बेरि-बेरि उगलि देबाक
कऽ रहल छी प्रयास अहर्निश
हम गढ़ि रहल छी एकटा अगिनवान
जाहि सँ सुखाऽ दी / संत्रासक एहि महानदी कें
भाई !
तैयो हमरा जगैत अछि आशा जे
अहाँ अवस्से भऽ पायब सफल
थाहऽ मे नदीक उत्स बिन्दु
कियैक तँ / अहाँ हमर मित्र छी
छी हमर सहयात्री
अहाँ हमर भाई छी
छी हमर समानधर्मा।

भाई !
हमरा चौंकाबैत अछि अवस्से
अहाँक कायरता
जे / अहाँक गन्तव्य
मात्र इजोत धरि अछि
आ अन्हार मे चलबाक जोखिम सँ
कतराऽ रहल छी अहाँ

ओना
पंच-प्रपंचक विटपजाल मे
ओझरायल अहाँक/संचेतनाक बहुरंगी पाँखि
अहर्निश परातिये गवेंये
जलयोगक अभावो मे
वायु पीबि उमकैत रहैये
अहाँक मोन
आ/एहि विटपजाल कें ध्वस्त करबाक लेल
अहाँक कुरहरि
पीबि रहल अछि
लोहारक भाथीक बसात
आ भऽ रहल अछि लाल टुह-टुह
तें हमर मोन मे जगैत अछि आशा
जे / अहाँ, लड़ब अन्हारक विरुद्ध अवस्से
कियैक तँ / अहाँ हमर मित्र छी
छी हमर सहयात्री
अहाँ हमर भाई छी
छी हमर समानधर्मा।

भाई !
अहाँ कें कम्प्यूटर सँ बहराइत
आखरक रंग-बिरंगक फोन्ट
करैत अछि त्रस्त
मुदा शीत-ताप-नियंत्रित कक्ष मे
बैसल कोनो सेठ-साहुकारक सगुन विचार
पबैत हो अहाँक कविता मे अपन स्थान
से मोन नहि मानैत अछि
आ/संदेहक सियाह अन्हार मे
औनाइत मनुक्खक मोनक असगुन सपना
अहाँ कें करैत हो त्रस्त
से मोन नहि मानैत अछि
कियेक तँ / अहाँ हमर मित्र छी
छी हमर सहयात्री

अहाँ हमर भाई छी
छी हमर समानधर्मा।
भाई !
अहाँक कविताक स्वर
अहाँक कान सँ नहि टकराइत होयत
से हमर मोन नहि मानैत अछि
अहाँक सपनाक दुनिया मे
हरियर-हरियर असंख्य सब्ज बाग हो
आ ओहि ठाम जनमैत हो
मुक्तिक चेतना
से हमर मोन नहि मानैत अछि
ओना ई अलग बात अछि भाई जे
हमर कविताक स्वर
अहाँक कानक बगल सँ
गुजरि जाइत होयत
आ अहाँ रहैत हैब बेखबर
तखन एहनो भऽ सकैत अछि
अहाँ पर विश्वास करैत हमर मोन
कोनो असंतुलित मस्तिष्कक प्रतिफलन होय।
तखन हमर मोने तँ इयेह कहैत अछि जे
जखन हमर मोन
भऽ जायत संतुलित
तँ मानि जायत जे
अहाँ लग / नञि अछि
कोनो समुद्र
नञि अछि कोनो पहाड़
नञि अछि कोनो महानगर
तखन हमर मोन
कहियो नञि मानत जे
अहाँ लग अछि कोनो महासमर।

●●●

डंकल

दरियाई घोड़ा जकाँ
अपन विशाल मुँह बौने
पश्चिमी सीमान पर
ठाढ़ अछि
एकटा विशाल राक्षस।

ऑक्टोपस जकाँ ई राक्षस
अपन शक्तिक धौंस जमेनय
अपन विशाल पीठ पसारनय
प्रशांत महासागरक कछेर पर
सूँढ़ पटकि रहल अछि
डंकल सन राक्षस।

विशाल मगरमच्छ सन / ई डंकल
गंगाक कछेर पर
रावीक कछेर पर
अपन मन मे मतंग
फुसियाहा नोरक संग
खौफनाक जबड़ा कें बौने
सभटा जीव कें
खयबाक लेल
ढेंग जकाँ ओंघरायल अछि
ई विशालकाय राक्षस।

●●●

OPPO F7

हर्षहन्ता

भावनाक बेसाखी पर
बिहुसैत खिलखिलाइत
एकटा सुन्दर खढ़िया
जीवनयात्राक सीढ़ी पर
नहुँ-नहुँ राखैत अछि अपन टाँग
टोनैत अछि मुलायम हरियर घास
निहारैत अछि
सस्य-श्यामला धरती पर
पसरल हरियर जाजीम
मोनक जमीन पर
जनमि जाइत अछि
आह्लादक सुन्दर गाछ

तखनहि एकटा विशाल सिंह
अपन शक्तिक संधानक संग
दहारैत पहुँचि जाइत अछि खेत
खढ़ियाक अरण्य रुदन कें
अनसुनी करैत ई सिंह
एकरा अपन जबरा मे
समाऽ लैत अछि
आ छीनि लैत अछि
खढ़ियाक चिर-प्रतीक्षित मुस्कान।

●●●

सम्पर्क

अहाँ हमरा सँ सम्पर्क करु
मुदा शर्त अछि
अहाँ आन किनको सँ सम्पर्क नञि करु
हम अहाँ कें बना देब
राहुल, राजकमल आ यात्री
मुक्तिबोध, अज्ञेय आ निराला
कालीदास आ शेक्सपीयर
विद्यापति आ टैगोर
अहाँ हमरा सँ सम्पर्क करु
मुदा शर्त अछि
अहाँ आन किनको सँ सम्पर्क नञि करु।

अहाँ हमरा सँ सम्पर्क करु
मुदा शर्त अछि
लिखि दिऔ एकटा इतिहास
इतिहास मे
हमर नाम आ कृतित्वक
करु चर्चा आ प्रशंसा
एक शर्त आओर अछि
आओर किनको चर्च नहि हुअय
मिसियो भरि नहि
चर्चा हुअय किनको आनक
अहाँ हमरा सँ सम्पर्क करु
अहाँ कें बना देब
हेरोडोटस आ रामविलास शर्मा
एजरा पाउंड आ होमर
अहाँ हमरे टा सँ सम्पर्क करु
किनको आन सँ
मिसियो भरि नञि करु सम्पर्क।

अहाँ हमरा सँ सम्पर्क करु

F7

मुदा शर्त अछि
अहाँ लिखु आलोचना ग्रंथ
विरोध की पक्ष
दुनू मे करु हमरे चर्चा
किनको आनक
चर्चा करब तँ जानि लिअऽ
दूधक माछी जकाँ
कऽ देल जायब
सभ दिनक लेल बहिष्कृत।

अहाँ हमरा सँ सम्पर्क करु
मुदा शर्त अछि
अहाँ आन किनको सँ सम्पक नञि करु
अहाँ आन्हर नञि छी
से हमरा पता अछि नीक जकाँ
मुदा अपना आप कें अहाँ
मानि लिअ आन्हर
ई हमर आदेश अछि
विश्वास करु
हम अहाँ कें
बनाऽ देब
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल व रमानाथ झा
नामवर सिंह व मोहन भारद्वाज
हजारी प्रसाद द्विवेदी व कुलानन्द मिश्र
सोमदेव व मायानन्द मिश्र
महाप्रकाश व सुभाषचन्द्र यादव
तारानन्द वियोगी व देवशंकर नवीन
मुदा शर्त अछि
अहाँ हमरा सँ सम्पर्क करु
मात्र हमरे टा सँ करु सम्पर्क
आन किनको सँ
मिसियो भरि नञि करु सम्पर्क।

●●●

OPPO F7

टेलीफोन पर माँ

सुरुज बहुत देर पहिनहि
पश्चिमक क्षितिज कें
कऽ गेल अछि पार
आकाशक रंग
भऽ गेल अछि कारी सियाह
आजुक अमावश्याक सियाह राति मे
चान सेहो चलि गेल अछि अन्यत्र।

एखनहि हमर हृदयाकाश पर
धमकि गेल अछि एकटा पूनमक चान
हमर हृदय मे
नञि अछि अमावश्याक सियाह राति।

टेलिफोनक रिसीवर
हमर कान मे लागल अछि
हमर कान सुनि रहल अछि
माँक कलपैत स्वर
माँ पूछैत छथि बेरि-बेरि
बाऊ ! खाना खेलय?

पुनः हमर हृदय सँ
विलाय लगैत अछि पूनमक चान
हमर हृदयाकाश पर सेहो
पसरय लगैत अछि
अमावश्याक सियाह अन्हार।

माँ भाँपि लैत छथि हमर आवाज
तूँ निश्चिते नञि खेलय यै
झूठ नञि बाज
हमर सप्पत

PO F7

कह खेलय यै कि नञि।

हम कहैत छियैक
माँ एखन एबे केलियैये
पुनः एकटा झूठ
पुनः आबैत अछि प्रश्न
एतेक देरी कियेक भेलौ ! बाउ !
हम कहैत छियैक
काज मे लागल छलहुँ।

माँ बेकल भऽ कहैत छथि
किछुओ पहिने खा ले बौवा
हम निरुत्तर भऽ जाइ छी
झूठ पर झूठ छुच्छे झूठ
माँ सँ झूठ
पुनः हमर आँखिक आगू
देखाइत अछि अन्हार।

हम अपन माँ कें
ई कहबाक साहस नञि कऽ पावे छी
जे माँ
एखन हमर भूख निपत्ता अछि
हम लिखि रहल छी कविता
अपन भूखक लेल नहि
असंख्य भूखल लोकक
अस्तित्व रक्षाक लेल
लिखि रहल छी एकटा कविता
सार्थक कविता।

●●●

एक गोट शुभचिन्तकक वक्तव्य

भाई !
आई अहाँक ठोर पर
खिचाऽ गेल अछि मुस्कानक लकीर
की बात छियै भाई
अहाँक ठोर परक पपड़ी निपत्ता अछि
निपत्ता अछि अहाँक आँखिक झुर्री
अहाँक आवाज मे
नञि अछि पहिलुका कारुण्यक ध्वनि
अहाँ अबिते कहैत छलहुँ
अपन दारिद्र-गाथा
समस्याक बाढ़ि
अहाँक मुँह सँ
निकलैत छल अहर्निश।

भाई !
हमरा भेटैत छल अवसर
चुआबैत छलहुँ देखौआ नोर
मुँह पर आनि लैत छलहुँ
विषादक चित्र पट।

भाई !
सत्ते अहाँ
बूझि नञि पाबैत छलहुँ हमर चालाकी
किछु देरक लेल
बिला जाइत छल अहाँक विषाद
हम टोहियाबैत छलहुँ अपन जेब
आई नञि, काल्हि आऊ
कहैत छलहुँ ओहि क्षण
अहाँक लाचार आ निश्छल मौन
हमरा पर कऽ लैत छल विश्वास
अहाँ आबैत रहैत छलहुँ बेरि-बेरि
एहि मध्य
भऽ जाइत छल

अहाँक समस्याक निदान
हमर अपन शुभचिन्तकक भाव
रहैत छल अक्षुण्ण।

आई,
अहाँक चेहरा पर
प्रसन्नताक भाव देखि
हम अतिचिन्तित छी
अहाँक जीवनक मरुथल
भऽ गेल अछि हरियर
अहाँक जीवन मे
उतरि गेल अछि
सुख शान्ति आ चैन

हम सदिखन
देखऽ चाहैत छलहुँ
अहाँक जीवन मे
बेचैनीक महासमुद्र
आब अहाँक जीवन
पहाड़ नञि अछि
अहाँक जीवन मे
नञि अछि
मिसियो भरि
समस्याक मकड़जाल
से हम सोचै छी
आब कोना देखाऽ पायब हम
अहाँ कें सहानुभूति
कोना मुफ्त परामर्शक
कऽ पायब इजहार
कोना चलत हमर
कृत्रिम सहानुभूतिक धंधा
मुफ्त मे कोना पावि सकब हम
शुभचिन्तकक प्रमाण-पत्र।
●●●

कविताक दर्द

कविताक दर्द
ओहि तथाकथित कवि कें की पता?
जे कविता कें
स्वान्तः सुखायक प्रेरणा बुझैत हो
कविताक दर्द तँ
ओहि कवि सँ पुछू
जे कविता कें
सर्वांतः सुखायक प्रेरणा बुझैत हो
आ / जिनकर भीतरक कवि
कविताक शब्द मे जीयैत हो।

●●●

सहस्त्राब्दीक शेष : एकटा प्रेम कविता

(1)

मीता !
एहि सहस्त्राब्दीक शेष मे
हम सोचि रहल छी जे
अहाँक नाम
रचि सकी एकटा कविता
कविता
प्रेम कविता।

मीता !
एहि सहस्त्राब्दीक शेष मे
हम सोचि रहल छी
एक बेर अवस्से
कऽ सकी स्पर्श
अहाँक कोमल देह।

मीता !
एहि सहस्त्राब्दीक शेष मे
हम सोचि रहल छी जे
अहाँक नाम
लिखि सकी एकटा पत्र
पत्र
प्रेम पत्र।

मीता !
एहि सहस्त्राब्दीक शेष मे
सोचि रहल छी जे
पूछि सकी अहाँ सँ
अहाँक सेहन्ता।

मीता !

एहि सहस्त्राब्दीक शेष मे
सोचि रहल छी जे
पुछि सकी अहाँ सँ
हम अपन काव्यक अर्थ।

मीता !
एहि सहस्त्राब्दीक शेष मे
हम सोचि रहल छी जे
अहाँ कें कहि दी सभटा बात
बात
हृदय मे नुकायल
अव्यक्त आ अस्पष्ट
कहि दी एक-एक बात
सभटा सुच्चा बात।

(2)
मीता !
ओना पता अछि हमरा
अहाँक रोम-रोम
नागफेनीक काँट जकाँ
भऽ जायत ठाढ़
अपन भविष्यक प्रति अहाँ
सोचऽ लागब असगुन
ओहुना
सदिखन हमर हेरायल रहब
अपना-आप मे
अहाँ के
देत अछि दारुण पीड़ा
आ हम
अहाँक भाग्यवादी सोचक
करै छी उपयोग
बड्ड चतुराइ सँ

OPPO F7

अहाँ के पोलहा दै छी जे
समय एतैक
सभ किछु ठीक भऽ जेतैक।

ओना मीता !
हमरा पता अछि
हमर दिन कें
हमर दुर्भाग्य
नञि केनय अछि वक्र।

हम चाहै छी
आकाश सभक भऽ जाई
हमरा नञि चाही
रक्त सँ भरल कोनो घैल
तें हम
रक्तजीवीक विरुद्ध
ठानि देनय छी एकटा युद्ध।

हमर दिन वक्र नञि अछि
सेहो मानै छी हम
ओना हमर सोझ दिनक निर्माण मे
अहाँक असंख्य सेहन्ताक
होइत छैक हत्या
सेहो मानै छी हम।

(3)
मीता !
मल्टीनेशनल कम्पनीक
रंगीन लेटर पेड पर
अहाँक कोमल हाथ सँ
एहि सहस्त्राब्दीक शेष मे
हमर नाम लिखल ई प्रेम-पत्र

हमर हाथ मे अछि।

पत्रक शब्दक उच्चारण करैत
अहाँक मधुर स्वर
हमर कान सँ टकराइत अछि
प्रत्येक अक्षरक पाँछा
अहाँक कोमल हाथ झलकैत अछि
शब्द मे पसरल मुस्कानक भाव मे
अहाँक बिहुँसैत ठोर
आह्लादक आभा सँ आलोकित
अहाँक चेहरा झलकैत अछि।

मुदा/मीता !
अहाँक ओहि आग्रहक
करै छी हम सम्मान
जाहि मे अहाँ
हमरा स्वास्थ्यक प्रति
साकांक्ष रहबाक
केनय छी निहोरा
सेव, समतोला आ कि दूध
कहाँ नसीब अछि हमरा
जे एहि सहस्त्राब्दीक प्रस्थान सँ पहिले
भरि मोन खयबाक
केनय छी आग्रह।

हम तँ एखनहु
एकटा पत्र लिखबाक
कऽ रहल छी सुर-सार
मुदा लिखायल जा रहल अछि
एकटा कविता
बीतल सहस्त्राब्दीक
क्रूरतम अध्याय कें

गरियाबऽ मे
व्यस्त अछि हमर कलम
आबऽवला सहस्त्राब्दीक
डेराओन भविष्यक प्रति
साकांक्ष छी हम
ओना हम तैयो
सोचि रहल छी
सहस्त्राब्दीक शेष सँ पूर्व
अहाँक नाम
अवस्से लिखब
एकटा प्रेम पत्र
ओना
एखन
हमर कविता/शेष नजि भेल अछि।

●●●

OPPO F7

उनटा बसात

भाइ !
शायद अहाँ कें पता नञि अछि
जे बसातो बदलैत छैक अपन रुख
इतिहासक असंख्य पत्रा पर
अंकित छैक असंख्य कथा
व बदलैत बसातक रुख।

भाई !
सुननय छियैक
जहिया रावणक मस्तिष्क पर
घमण्ड बना लेलक अपन घर
तऽ ओकर विद्वता
विलीन होइत गेल
अहंकारक अन्हार मे
बिसरि गेल इजोतक अर्थ
बोआइत रहल अन्हार मे।

महादेवक भक्त रहितो
कामक आगि मे
धधकऽ लगलैक ओकर मोन
मर्यादाक सीमा कें लाँघेत रावण
चलि गेल एकटा जंगल
जंगल अन्यायक जंगल
जंगल अन्हारक जंगल
शोषण आ दमनक जंगल
ओ बोआय लागल निःधोख
अन्हार मे हँसैत ओहिना
जेना सुग्गर
विष्ठा कें स्वादेत
होइत अछि अति प्रसन्न।

भाई !
अहाँ कें पता होयबाक चाही
हवाक रुख रावणक पक्ष मे छल
मुदा अहाँ कें नञि बिसरबाक चाही
जे बसात बदललक अपन रुख रामक लेल
आ राम
सत्यमेव जयतेक नाराक संग
बदलि देनय छल हवाक रुख
एकरा यादि पाड़ैत
हमरा बुझाइत अछि
उनटा बसात आवश्यक अछि
हवाक रुख बदलबाक लेल

●●●

OPPO F7

चेतौनी

मीता !
एहि बीच हम
सोलह हजार एक अप्सरा मध्य
कऽ रहल छी विहार
प्रत्येक अप्सराक
जुगल गुलाबी गाल पर
चुम्बन लैत
हम बिसरि जाइ छी
भूख आ पिपासा।

मीता !
हमर अन्तर मे जनमैत
कामेच्छा
अतृप्त काम-कामना
हमरा बिसरा दैत अछि
भोरक आगमनक आभास
नहि देखि पबै छी
भोरका आकाश पर पसरल
कोनो रक्ताभ सूर्य।

मीता !
सोलह हजार एक अप्सराक
मधुर बोल सुनैत-सुनैत कान
बिसरि जाइत अछि सुनब
कोयलीक स्वरक मिठास।

मीता !
सोलह हजार एक अप्सराक मध्य
करैत विहार सँ
हमर मोन मे

जनमऽ लागेत अछि
बबुआनीक गाछ
बिसरि जाई छी सर्वहारा जीवन
ओहिना जेना
कोनो भैंसवार वा हरवाह
भरि दिनक अथक परिश्रम
आ मालिकक दुत्कार के
बिसरि जाइत अछि
टाट सँ बेढ़ल घर मे
डिबियाक सिसकैत इजोत मे
अपन जीवनक अप्सराक
मूँह कें निहारैत
शायद ओकरो
देखाइत अछि
सोलह हजार एक अप्सरा
एक दोसराक पाँज मे
ओझरायल ओ सेहो
बिसरि जाइत अछि
भोरका आकाश पर पसरल
सूर्यक रक्ताभ रंग
आह्लादक बसंतक मधु सँ मातल
कोनो गाछक डारि पर बैसल
कोयलीक स्वरक मिठास
शायद ओकरो जीवन मे
उतरि जाइत अछि बबुआनी।

मीता !
एहि बीच
असंख्य चुगलखोरक मध्य फँसल छी हम
शायद ओ

अहाँ कें दऽ दिअय
एहन दारुण संवाद
जाहि सँ
अहाँ भऽ जाइ विदग्ध
जे अहाँक मीत / कऽ रहल अछि विहार
सोलह हजार एक अप्सराक मध्य।

मीता !
अहाँ सहज छी
अति सहज
मीता !
अहाँ निश्छल छी
अत्यंत निश्छल
मीता !
अहाँ भावुक छी
अति भावुक
अहाँक लेल शायद
एहन दारुण संवाद
भऽ जायत असह्य
आ अहाँ लऽ लेब निर्णय
कोनो असगुन निर्णय
अहाँ कऽ बैसब
कोनो अनहोनी काज।

मीता !
अहाँक एहन निर्णय
एहन अनहोनी काज
हमर जीवन के कऽ देत बंजर
शायद हमरो खातिर
भऽ जायत असह्य हमर जीवन

हमहुँ लऽ लेब निर्णय
कोनो असगुन निर्णय
हमहुँ कऽ बैसब
कोनो अनहोनी काज
कारण अहाँक प्रस्थानक संगे
हमर जीवन सँ
बिलाऽ जायत
सोलह हजार एक अप्सरा।

मीता !
हम सत्ते कऽ रहल छी विहार
सोलह हजार एक अप्सरा मध्य
मीता !
कोना बीति जाइत छैक
शतकोटि साल
शतकोटि वसंतक संग
असंख्य कोयलीक
मधुर स्वरक संग
असंख्य रक्ताभ सूर्यक किरणक संग
हम बूझि नञि पबै छी।

मीता !
विश्वास करु
अहीं छी हमर जीवन
सोलह हजार एक अप्सरा
अहीं छी
अहीं छी हमर कविताक
असंख्य अप्सरा
अहीं छी हमर जीवनक
असंख्य वसंत
अहीं छी हमर कानक लेल

OPPO F7

कोयलीक मधुर स्वर
अहीं छी हमर अतृप्त आँखिक लेल
असंख्य बालारुण रक्ताभ सूर्य।

मीता !
अहाँ प्रत्येक वर्ख
जाई छी नैहर
खेलै छी सामा-चकेवा
चुगला कें करै छी सुड्डाह
हमरा विश्वास अछि
अहाँ आब
प्रत्येक क्षण / करैत रहब सुड्डाह
सभटा चुगलखोर कें।

●●●

F7

बबुआनीक गणित

एकटा विशाल भवन
विशाल भवन मे एकटा विशेष कक्ष
कक्ष मे लागल ह्वीलर कुर्सी
सजायल एकटा टेबुल
कॉल बेलक टनटनी सँ
नियंत्रित होइत
मुहथरि पर बैसल एकटा चपरासी
अहाँ भले जे बुझु
हमरा ओहि ठाम
बबुआनीक गंध बुझाइत अछि।

एकटा विशाल काया
आँखि पर चमचमाइत चश्मा
तनल भृकुटी
सभटा सहयोगी कर्मचारी पर
जमबैत अपन रोब
जनताक जेबी नोचैत
फुलबैत अपन तोंद
कोनो ए.सी.कार मे बैसल
धांगैत नगर-शहर आ महानगरक सड़क
अहाँ भले जे बुझु
हमरा ओहि ठाम
बबुआनीक गंध बुझाइत अछि।

एकटा पंचतारा होटल
होटल मे एकटा घर
घर मे एकटा छौंड़ी
टेबुल पर सजायल
शराबक बोतल
एक-एक घोंट शराब सँ

लाल होइत आँखि
निर्लज्जताक सीमा पार करैत
जखन किओ
जमबैत हो ठोर
ओहि छौंड़ीक गाल पर
भरैत हो आलिंगन
अहाँ भले जे बुझु
हमरा ओहिठाम
बबुआनीक गंध बुझाइत अछि।

अहाँ भले
कोनो भीख माँगैत बबुआन कें
शोषकक पाँति मे राखि दी
ई अहाँक मोन अछि
अहाँ भले
अपन अस्तित्वक संघर्ष मे व्यस्त
कोनो बबुआन कें
वेश्यागामी कहि लिअऽ
अहाँक मोन अछि
अहाँ कोनो हर जोतैत बबुआन कें
सावित कऽ दी क्रुर आ निष्ठुर
अहाँक मोन अछि।

हमरा बुझाइत अछि
आजुक बाजारु दुनिया मे
जतय सहानुभूति नञि अछि
मरि गेल अछि संवेदना
जीवित अछि छुच्छे टाका
साम-दाम-दण्ड भेद
ओतय बबुआनीक लेल

जरुरी अछि
पैघ पद पर नौकरी
ढाकीक ढाकी टाका
घोटाला, धोखा आ फरेब
शोषण, दमन आ छद्म समाज सेवा
आ बबुआनीक अट्टालिकाक लेल
किछु रंगदार
किछु सफेद पोश,
छद्म प्रतिष्ठा, अहंकार
कोटि-कोटि टाका।

●●●

गुरु-पर्व

ओ दिन
हमरा नीक जकाँ मोन अछि
जाहि दिन हम
ताकि रहल छलहुँ
कोनो प्रेरणाश्रोत
कोनो गुरुवर
कोनो अभिभावक।

हमरा हृदय मे
कहियो नञि
अंकुरायल छल
एक्कोटा संदेहक पेंपी
गाम मे।

गाम मे
कहियो नञि
अभरल छल हमर हृदय मे
एक्को रत्ती संदेहक भाव
सत्ते
गाम मे भेटैत छल
हरियर कचोर पिरथी
हँसैत गाछ
सत्ते
सहानुभूतिक गंगा
बहैत छल गाम मे
सहानुभूतिक धार मे
नहाइत
हमर मोन सदिखन
रहैत छल आह्लादित।

गाम सँ महानगरक प्रस्थान
अपन परिजन-पुरजन सँ आशक्ति
माँक आँचर सँ निकसैत

वात्सल्यक गंगा
पिताक कोर मे हँसैत हमर मोन
बहिनक हृदय मे बसल हमर मोन
पत्नीक चेहरा पर अभरैत
प्रसन्नताक भाव
समस्त आह्लादक भाव सँ
मुक्त होइत हमर मोन
कइयेक बेर भऽ जाइत छल विचलित
गाम सँ परदेशक लेल प्रस्थान
परदेश दिस खींचैत हमरा ट्रेन
सत्ते कटाह लगैत छल।

गुरुवरक खोजक हमर जिद्द
कोनो प्रेरणाश्रोत कें टोहैत
हमर मोन
कोनो संदेहमुक्त अभिभावक लेल
हमर कछमछी
हमरा महानगर मे बान्हि लैत छल
आ हम विश्वासक कैलाश उठौनय
ताकैत रहलहुँ एकटा गुरुदेव
सुच्चा गुरु
हम ताकैत रहलहुँ
एकटा प्रेरणाश्रोत
एकटा अभिभावक
सुच्चा अभिभावक।

जीवनक शान्तिक लेल
जरुरी अछि
एकटा गुरुवर
सुच्चा गुरुवर
जिनका सँ भेटि सकय
एहि ग्लोवल दुनियाक यात्राक लेल
कोनो बाट
हम बेलल्ला भेल

ओनाइत रहलहुँ
एकटा गुरुक लेल
सुच्चा गुरुक लेल
जीवनक शान्तिक लेल
जरुरी अछि एकटा अभिभावक
सुच्चा अभिभावक
जिनका कहि सकी
अपन मोनक सभटा बात
जीवन शान्तिक लेल
जरुरी अछि
एकटा इतिहास पुरुष
सुच्चा इतिहास पुरुष
जकरा सँ भेंटि सकय
एहि बहुराष्ट्रीय दुनियाक लेल
प्रेरणाक कोनो धार।

एहि महानगर मे
आजुक उत्तरआधुनिक दुनियाक तांडव
हमरा कऽ देत अछि त्रस्त
अपसंस्कृतिक बाढ़ि
हमरा कऽ देत अछि विचलित
एहि महानगर मे हम
ताकि लेलों
असंख्य गुरुदेव
असंख्य अभिभावक
असंख्य प्रेरणाश्रोत।

कोनो वस्तु जकाँ
जखन हमर अस्तित्वक
होमय लागल उपयोग
तखन
हमर हृदय मे
जनमय लागल
असंख्य संदेहक गाछ

संदेह कें विश्वास मे
कऽ सकी प्रवर्तन
ताहि लेल हम
मनबैत रहलहुँ गुरुपर्व
गुरु पर्व
एकटा इतिहास गढ़बाक लेल
मनबैत रहलहुँ गुरुपर्व
गुरु सेवा हमर धर्म अछि
मानैत रहल हमर आत्मा
मुदा ओहि दिन
चौंकि गेलहुँ हम
भऽ गेल छलहुँ
किंकर्त्तव्यविमुढ़ हम
जखन हमर गुरुपर्व
कोनो तिकरमक
भऽ गेल छल शिकार
हमर मोन मे जनमैत
सेवा भाव कें
नेस्त-नाबूद करबाक
होइत रहल षड़यंत्र।

हमर गुरुदेव
ओहि दिन
पियास सँ छलाह बेकल
आ हम
जेठक रौद मे
ताकैत रहलहुँ पानि अपन गुरुक लेल
हम भऽ गेल छलहुँ सफल
जखन भेंटि गेल पानि
हमर गुरुवरक लेल
मुदा जखन गुरुदेव
भऽ गेल छलाह धधरा
हमर हाथ मे पानि देखि
आ ओ पानि

उझलि लेलाह
अपन पायर पर
आ फेर केलन्हि संकेत
जे हम फेर आनि सकी
हुनक पिपासा शान्त करबाक लेल
एक लोटा शीतल जल
ओहि रौद मे टटाइत
फेर आनलहुँ पानि
मुदा ता धरि
हमर आनल पानि
अनुपयुक्त भऽ गेल छल
गुरुदेवक मुर्च्छा तोड़बाक लेल
छींटैत रहलहुँ पानि
मुदा गुरुदेव
सुति रहलाह दीर्घनिद्रा मे।

हमर भीतर जनमैत
गुरुसेवा-भाव
नञि लऽ सकल आकार
हम बेलल्ला भेल
भऽ गेलहुँ विक्षिप्त
सोचैत रहलहुँ अहर्निश
आब फेर कोनो दिन
मनाऽ सकब गुरु पर्व
सुच्चा पर्व
मुदा गुरुदेव
सुति रहलाह दीर्घनिद्रा मे
हमर प्रार्थना भऽ गेल अनुपयुक्त
हम नहि मना सकलहुँ
एकटा गुरुपर्व।

●●●

कंचनमालाक कविता पढ़ैत

कंचनमाला !
आई हमरा बुझाइत अछि
सत्ते / अहाँक सींथ मे
हमर मुट्ठी सँ झहरल सिन्नुर
सफल भऽ गेल अछि।

शायद अहाँ
बहुत पहिनहि
कविताक दुनिया मे
कऽ गेल छलहुँ प्रवेश
सम्पूर्ण आकाश
अहाँ कें अपन बुझाइत अछि
ई अहाँक
निश्छलता आ संघर्षशीलताक
प्रमाण अछि।

कागत पर पसरल
समस्त कविता
अहाँ कें अपन बुझाइत अछि
ई अहाँक
काव्य-प्रतिभा आ
शब्दयात्री होयबाक प्रमाण अछि
अपन जीवन कें
समाजक लेल
करऽ चाहै छी समर्पित
ई अहाँक
परोपकारी चरित्रक प्रमाण अछि।

अहाँक असंख्य वास्तविक तथ्य
हमरा झमारैत अछि अनायास
अहाँक लेल

कोमल आ आशुतोष
ओतबे प्रिय अछि
जतबा अहाँक लेल अहाँक कविता
अहाँ हमर कविता पढ़ि
ततबे आह्लादित होइ छी
जतबा हमर बाँहि मे ओझरायल
अहाँक हृदय स्पंदित होइत अछि।

सत्ते कंचनमाला
अहाँक कविता
हमर हृदयक कऽ रहल अछि विस्तार
असीम क्षितिज धरि पसरल
विशाल पिरथी जकाँ
सत्ते अहाँक कविता
हमर छातीक कऽ रहल अछि विस्तार
महासागरक अतल गहराई सँ लऽ के
अंतरिक्षक पारक शून्य धरि।

कंचनमाला !
सत्ते आई हमरा बुझाइत अछि
अहाँक सींथ मे
हमर मुट्ठी सँ झहरल सिन्नुर
सफल भेल अछि।

●●●

आतंकक कारी मेघ

आतंकक ई कारी-कारी मेघ
धरतीक हरियर रंगक सौन्दर्य कें
नेस्त-नाबूद करबाक साजिश मे
भऽ गेल अछि सफल।

मनुक्खक अस्तित्व पर लागल प्रश्नचिह्न
आ मानवताक विजय गाथा
परिथीक विशाल वक्ष कें
कऽ देनय अछि कलंकित।

आतंकक चमकैत लपलपाइत
धरगर तरुआरि
मनुक्खक गर्दनि कें छोपऽ मे
व्यस्त अछि अहर्निश
कोशी मायक
बिगरल आ तमतमायल चेहराक
स्मृतिक बाढ़ि मे
उबडुब कऽ रहल अछि हमर मोन।

धरतीक आँचर पर पसरल
हरियर-कचोर जाजीम
जहिना नञि
सोहाइत छलन्हि
माय कोशी के
तहिना आई
नञि सोहाइत अछि
एहि राक्षस के
मानवताक हरियर-कचोर फसल।

वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर कें
ध्वस्त केनय छल

एकटा राक्षस
दानवताक रंग मे रंगल ओकर आत्मा
आत्मतुष्टिक लेल
विध्वंशक लेल छल सर्मापित
ओ चानक रंग के
मलीन करबा मे व्यस्त छल
ओ सुरुज कें अपन जेबी मे राखबाक
सपना सपनाइत छल अहर्निश।

ओकरा पता छलैक
ओ इतिहासक रावण, कंस, दुर्योधन
हिटलर, सिकन्दर, तैमुर व ब्रिटिश
बनऽ चाहैत छल
ओकर हृदय सँ बिलाऽ गेल छलैक
राम, कृष्ण, ईशा, मुहम्मद, बुद्ध, महावीर
वा गाँधी बनबाक सपना
ओ चाहैत छल आ चाहैत अछि
ध्वंश मात्र ध्वंश।

इरान आ कि अफगानिस्तान
काश्मीर आ कि पंजाब
संसद भवन आ कि बम्बई
गया-जहानाबाद आ कि गोधरा
सम्पूर्ण ग्लोब/भऽ रहल अछि
लहु-लोहान
सुदुर देहातक चूल्ही सँ लऽ कें
अंतरिक्ष मे उड़ैत प्रक्षेपास्त्र धरि
पसरि गेल अछि
आतंकक ई कारी-कारी मेघ
मानवताक हरियरीक सौंदर्य कें
नेस्त-नाबूद करबाक साजिश मे
भऽ गेल अछि सफल।
●●●

माँक ब्रह्मवाक्य

माँ ! आई तोहर बात
ब्रह्मवाक्य जकाँ लगैत अछि जे
ई कविता
तोरा बरबाद कऽ देतौ
से सत्ते हम बरबाद भऽ गेल छी, माँ !

ई कविता
कहाँ देत अछि सम्मान
कहाँ देत अछि रोटी ई कविता
ई कविता तँ
जनमैत अछि
हमर बरबाद भेल जीवन सँ
सुखायल ठोर आ पीठ मे सटल पेटक
सामंजस्य सँ
गढ़ाइत अछि
कविताक काया।

सत्ते माँ तोहर कहल बात
ब्रह्मवाक्य जकाँ लगैत अछि जे
ई कविता तोरा बरबाद कऽ देतौ
से सत्ते हम बरबाद भऽ गेल छी।

●●●

ओना बूझल होयत

पश्चिम क्षितिज सँ
साँय-साँय हवाक संग
अपन चोखगर लोल कें अलगौनय
एकटा डेराओन अट्टहासक संग
पूवक क्षितिज दिस
बढ़ल आबि रहल अछि
असंख्य विशालकाय गिद्ध।

गिद्ध कइयेक वर्ख सँ
मरीक कऽ रहल अछि इन्तिजार
गिद्धक चोखगर टेढ़का लोल
सभ दिन करैत रहल
मरीक संगोर
ओना बूझल होयत
एहि गिद्धक इतिहास
समृद्ध अछि
भाला आ तरुआरिक संस्कृतिक
जनक इयेत गिद्ध अछि
तोप आ बन्नुक सँ
मिसाइल आ परमाणु बम धरि
ई गिद्ध
मंडराइत रहल अछि
मरीक जोगार मे।

काल्हि सुननय छलियैक
गिद्धक संस्कृतिक विनाशक लेल
ई गिद्ध
पहिरि लेनय छल कण्ठी-माला
ओढ़ि लेनय छल

रामनामी चद्दरि
सत्य-अहिंसा आ शान्तिक स्थापना लेल
पहुँचि गेल छल अफगानिस्तान
अपने कार्यशालाक प्रशिक्षित
गिद्धक विरुद्ध
हानि देनय छल एकटा युद्ध
निरीह जनता व गरीब लोक
आश्रयक लेल
औनाइत रहैत छल अहर्निश।

एखनहुँ फेर
पश्चिम क्षितिज सँ
साँय-साँय हवाक संग
अपन चोखगर दाँत कें अलगौनय
एकटा डेराओन अट्टहासक संग
पूबक क्षितिज दिस
बढ़ल आबि रहल अछि
असंख्य विशालकाय गिद्ध।

ओना बूझल होयत
ई गिद्ध
अपन तानाशाहीक रक्षाक लेल
उजरा परबाक
कालि कऽ देनय छल वध।

अपन कारी करतुत कें झाँपबाक लेल
बनौनय छल
एकटा शान्ति स्तूप
शान्ति-स्तूप
एखनहुँ

एहि गिद्धराजक लखराज छियैक
आ ई गिद्ध
पुनः जुमि गेल अछि इराक
सुपर पावरक राजशाहीक लेल
बलिदानी होइत छथि आम लोक
आब ई गिद्ध
पुनः फरफराऽ रहल अछि
अपन विशाल पाँखि
पिजाऽ रहल अछि लोल
तैयो अपन कुर्सीक रक्षा हित
असंख्य प्रजातंत्रीव गिद्ध
एहि गिद्धक स्वागत मे
बेहाल छथि।

•••

OPPO F7

कविता लेखन बन्न करु

ओहि दिन
आकाशक रंग साफ नहि छल
गाँधीक जमीन पर
सत्य आ अहिंसाक फसलक
कोनो नामोनिशान नहि छल
असंख्य साम्प्रदायिक राक्षस
अपन चेहरा कें
बनाऽ लेनय छल
आओर बेसी डेराओन
किछुए दिन पहिले
पूर्वक क्षितिज सँ
आयल छल एकटा राक्षस दल
राक्षस दलक रक्त मे
घोरक छल निर्दयता
ओ अपन तरुआरि आ भाला सँ
मानवताक कें
कऽ रहल छल विद्ध।

तत्पश्चात दोसर राक्षस
अपन त्रिशुली आँखि सँ
नजर गराऽ लेनय छल
निमुधन जनता पर
ओ सहस्त्रगुना निर्दयताक संग
प्रेमक गंगा कें
कऽ देनय छल विषाक्त
मानवताक हत्या
नारीक चीर-हरण
आ गर्भ सं निकालि
कोनो चेहाइत नवजात शिशुक हत्या
भारतक माथ कें
झुका देनय छल।

OPPO F7

मानवताक हत्या
एहि लेल नहि भेल छल जे
ओकरा करबाक छल
अपन-अपन धर्मक रक्षा
राक्षस आ धर्म मे
कहाँ अछि सामंजस्यक संभावना
हत्याक तांडव सँ
दलमलित भऽ गेल छल
गाँधीक जमीन
दलमलित भऽ गेल छल
हमर आत्मा।

गुजरातक धरतीक पीड़ा
हमर कविता मे
लेमऽ चाहैत छल आकार
बनाऽ लेनय छलहुँ हम अपन मन
बैसि गेल छलहुँ
लिखबाक लेल एकटा कविता
गढ़बाक लेल
एकटा हथियार
रचबाक लेल
एकटा सुच्चा काव्य।

तखनहि अतिचिन्तित मुद्रा मे
ठाढ़ भऽ गेलीह हमर पत्नी
सहज भावें
कहलीह हमर पत्नी
``बौवा बीमार छे``
हम पत्नीक चेहरा दिस
गराऽ देलहुँ अपन नजरि
पत्नी छलीह चिन्तित
अति चिन्तित छलीह हमर पत्नी

हम पुनः कविता पर
भऽ गेलहु केन्द्रित
पत्नी धधकि गेलीह
बजलीह हमर पत्नी
दबाई आनवाक अछि।

हमरा लेल
असंभव छल
कविता सँ मुक्ति
तखनहि पत्नी
रेड-एलर्टक मुद्रा मे कहलीह
सावधान !
कविता लेखन बन्न करु।

●●●

OPPO F7

अहाँ जे देखि रहल छी

अहाँ जे देखि रहल छी एहि ठाम
दूर धरि पसरल विशाल बंजर भूमि
एकर उस्सरपन आ उज्जर रंग
अहाँक हृदयक आंगन मे
बनबेत होयत
निराशाक अट्टालिका
बहुत दूरहि सँ अहाँ
झाँपि लेत होयब अपन नाक।

अहाँ जे देखि रहल छी एहि ठाम
दूर धरि पसरल विशाल बंजर भूमि
एकर उस्सरपन आ उज्जर रंग मे
डेग-डेग पर पसरल हड्डीक ठठरी
धरतीक आँचर पर पसरल लाल रंग
असंख्य जीवक लाशक चित्र
बनबेत होयत अहाँक हृदय मे
निराशाक अट्टालिका।

अहाँ जे देखि रहल छी एहि ठाम
दूर धरि पसरल विशाल बंजर भूमि
एकर उस्सरपन आ उज्जर रंग
एहि ठाम पसरल अछि असंख्य लाश
लाश, निरीहताक प्रतिबिम्बन
लाश, इमानक हत्या
लाश, संवेदना पर कुठाराघात
लाश, संवादक अंत
लाश, नैतिकताक मृत्यु
अहाँक आँखिक आगू
पसरल अछि
लाश-लाश-छुच्छे लाश।

O F7

अहाँ जे देखि रहल छी एहि ठाम
दूर धरि पसरल विशाल बंजर भूमि
एकर उस्सरपन आ उज्जर रंग
एहि ठाम मंडराऽ रहल अछि गिद्ध
गिद्ध पिजाऽ रहल अछि अपन लोल
मरीक जोगार मे गिद्ध
करतै अछि
असंख्य तकनीकक सृजन।

अहाँ जे देखि रहल छी एहि ठाम
दूर धरि पसरल विशाल बंजर भूमि
एकर उस्सरपन आ उज्जर रंग
एहि ठाम, मंडराइत गिद्धक हेंज
साँय-साँय स्वरक संग
डोलबैत अपन पाँखि
नोचि रहल अछि माउस
गिद्ध कऽ रहल अछि
एकटा घिनाओन
गिद्ध संस्कृतिक सृजन।

●●●



मूल नाम	:	बिनय भूषण ठाकुर
पिता	:	श्री योगेन्द्र ठाकुर
माता	:	श्रीमती पवित्री ठाकुर
जन्म	:	06-11-1968
शिक्षा	:	एम.ए. (अर्थशास्त्र), बी.एड.
पता	:	बरहशेर, भाया : पंचगछिया प्रखंड : सत्तर-कटैया, जिला : सहरसा-852124 मो. : 9874274019
सम्पादन	:	धार, जागृति, कोशी, मिथिला चेतना, सृजन सनेश, मिथिला चेम्बरक सनेश, श्री मिथिला, कतिपय स्मारिकाक सम्पादन।
वृत्ति	:	अध्यापन, विद्यापति विद्यामंदिर, कोलकाता
शीघ्र प्रकाश्य	:	जखन कविता नारा भऽ जाइत अछि *(कविता संग्रह)*, लहकैत चिनगी (मैथिली उपन्यास)



Bhorukawa Publication
Kolkata - 7

Print & Design by : Lakhanpati Jha, Kolkata, Mob. : 09748120990, 09883072050